सोना 67,935
चांदी 75,700
तिथि-फाल्गुन शुक्ल एकम
शेयर मार्केट 74,119
निफ्टी 22,493
अधिकतक 28 डिग्री
न्यूनतम 15 डिग्री

लखनऊ से प्रकाशित एवं उत्तर प्रदेश के सभी जनपदों से एक साथ प्रचारित

चर्चित राजनीति

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक
-: सर्वाधिक लोकप्रिय समाचार पत्र :-

www.charchitrajnit.com | वर्ष-20 अंक- 110 | R.N.I. No. UPHIN/2004/14385 | लखनऊ, सोमवार, 11 मार्च 2024 | पृष्ठ 8 | मूल्य : 2 रुपये

आजमगढ़ आज विकास की नई गाथा लिख रहा है : मोदी

आजमगढ़ में 34,000 करोड़ रुपये से अधिक की कई विकास पहलों का उद्घाटन, लोकार्पण और शिलान्यास किया

❑ उत्तर प्रदेश में 19,000 करोड़ रुपये से अधिक की परियोजनाओं से रेल और सड़क क्षेत्र की आधारभूत अवसंरचना को सुदृढ़ बनाया जाएगा
❑ आज उत्तर प्रदेश केंद्रीय योजनाओं को लागू करने में सबसे सर्वोत्तम प्रदर्शन करने वाले राज्यों में से एक है''

(चर्चित राजनीति/संवाददाता)

आजमगढ़ । प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने आज उत्तर प्रदेश के आजमगढ़ में एक कार्यक्रम में 34,000 करोड़ रुपये से अधिक की कई विकास पहलों का उद्घाटन, लोकार्पण और शिलान्यास किया। इस अवसर पर प्रधानमंत्री ने इस तरह के कार्यक्रम दिल्ली के स्थान पर आजमगढ़ जैसी जगहों पर होने की दिशा में आए परिवर्तन का उल्लेख किया। उन्होंने कहा, ''पिछड़े इलाकों में गिना जाने वाला आजमगढ़ आज विकास की नई गाथा लिख रहा है।''आज आजमगढ़ से 34,000 करोड़ रुपये की परियोजनाओं का उद्घाटन और शिलान्यास किया गया। प्रधानमंत्री ने देशभर में 9800 करोड़ रुपये से अधिक की 15 हवाईअड्डा परियोजनाओं का उद्घाटन और शिलान्यास किया। उन्होंने पुणे, कोल्हापुर, ग्वालियर, जबलपुर, दिल्ली, लखनऊ, अलीगढ़, आजमगढ़, चित्रकूट, मुरादाबाद, श्रावस्ती और आदमपुर हवाई अड्डों के 12 नए टर्मिनल भवनों का उद्घाटन किया। प्रधानमंत्री ने कडप्पा, हुबली और बेलगावी हवाई अड्डों के तीन नए टर्मिनल भवनों की आधारशिला रखी। हवाई अड्डों के निर्माण कार्य पूरा होने की गति को स्पष्ट करते हुए प्रधानमंत्री ने बताया कि ग्वालियर टर्मिनल केवल 16 महीनों में पूरा हो गया। उन्होंने कहा, ''यह पहल देश के आम नागरिकों के लिए हवाई यात्रा को आसान और सुलभ बनाएगी।'' प्रधानमंत्री ने इस बात पर बल दिया कि घोषित परियोजनाओं को समय पर पूरा करने का सरकार का रिकॉर्ड इन परियोजनाओं के चुनावी हथकंडे होने के आरोप को खारिज करता है। प्रधानमंत्री ने कहा, लोग देख रहे हैं कि मोदी अलग मिट्टी से बने हैं, मैं एक विकसित भारत बनाने के लिए लगातार काम कर रहा हूं। प्रधानमंत्री ने कहा कि हवाई अड्डे, राष्ट्रीय राजमार्ग और रेलवे अवसंरचना के साथ-साथ शिक्षा, जल और पर्यावरण से जुड़ी परियोजनाओं को आज नई गति मिली है। प्रधानमंत्री ने आजमगढ़ के लोगों को एक नई गारंटी देते हुए कहा कि 'आजमगढ़, आजन्म 'विकास का गढ़' रहेगा। स्थानीय बोली में बोलते हुए, प्रधानमंत्री ने कहा कि हवाई अड्डे, अस्पताल और मेडिकल कॉलेज के साथ, आजमगढ़ अब पड़ोसी बड़े शहरों पर निर्भर नहीं है। प्रधानमंत्री ने कहा कि पिछले 10 वर्षों में इस क्षेत्र में तुष्टिकरण और वंशवाद की राजनीति की जगह विकास की राजनीति देखने को मिल रही है। प्रधानमंत्री ने कहा कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के

नेतृत्व में इस प्रवृत्ति को नई गति मिली है। उन्होंने कहा कि अलीगढ़, मुरादाबाद, आजमगढ़, श्रावस्ती जैसे शहरों को उत्तर प्रदेश के पिछड़े क्षेत्रों के रूप में नजरअंदाज किया गया था, आज उनके तेजी से समग्र विकास के कारण हवाई कनेक्टिविटी मिल रही है। उन्होंने कहा कि कल्याणकारी योजनाओं की तरह, आधुनिक बुनियादी ढांचा मेट्रो शहरों से आगे छोटे शहरों और गांवों तक बढ़ रहा है।

कायस्थ परिवार के अभिनंदन कार्यक्रम में सम्मिलित हुए केंद्रीय रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह

(चर्चित राजनीति/संवाददाता) लखनऊ। चौक स्थित अटल बिहारी वाजपेई कन्वेंशन सेंटर में कायस्थ परिवार द्वारा अभिनंदन समारोह कार्यक्रम आयोजन किया गया जिसमें मुख्य अतिथि केंद्रीय रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, उपमुख्यमंत्री बृजेश पाठक, भाजपा वरिष्ठ नेता नीरज सिंह,लखनऊ महानगर अध्यक्ष आनंद द्विवेदी,लखनऊ महापौर सुषमा खर्कवाल, एमएलसी मुकेश शर्मा, रामचंद्र प्रधान कार्यक्रम में उपस्थित रहे ।कार्यक्रम की शुरुआत अतिथियों द्वारा भगवान चित्रगुप्त के चित्र पर पुष्प अर्पण और दीप प्रज्वलन करके किया गया। लखनऊ में नवनिर्मित कुकरेल फ्लाई ओवर का नाम भगवान चित्रगुप्त महाराज के नाम पर किए जाने पर केंद्रीय रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह जी का कायस्थ परिवार की ओर से आभार व्यक्त किया गया।

पीएम मोदी ने लखनऊ एयरपोर्ट के टर्मिनल 3 का किया वर्चुअली लोकार्पण, डॉ. राजेश्वर सिंह ने कहा-सरोजनीनगर के लिए गौरवपूर्ण क्षण

(चर्चित राजनीति/संवाददाता) लखनऊ। लखनऊ के सरोजनीनगर विधानसभा क्षेत्र में स्थित चौधरी चरण सिंह अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे के नये टर्मिनल-3 के भवन का वर्चुअली लोकार्पण रविवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा किया गया, कार्यक्रम में सरोजनीनगर से भाजपा विधायक डॉ. राजेश्वर सिंह ने सहभागिता की और पीएम मोदी का आभार जताते हुए कहा कि यह सरोजनीनगर के साथ-साथ पूरे लखनऊ के लिए गौरवपूर्ण क्षण है, इससे सरोजनीनगर की भारत में विशिष्ट पहचान बनेगी। उन्होंने कहा कि पीएम मोदी और सीएम योगी के नेतृत्व में उत्तर प्रदेश विकास की नई बुलंदियों को छू रहा है।

सरोजनीनगर को मिली अनेकों सौगात, डॉ. राजेश्वर सिंह ने किया 163 विकास योजनाओं का लोकार्पण/शिलान्यास, प्रधानमंत्री आवास योजना परिसर में मंदिर निर्माण के लिए विधायक डॉ राजेश्वर सिंह ने की 1 लाख रुपये देने की घोषणा

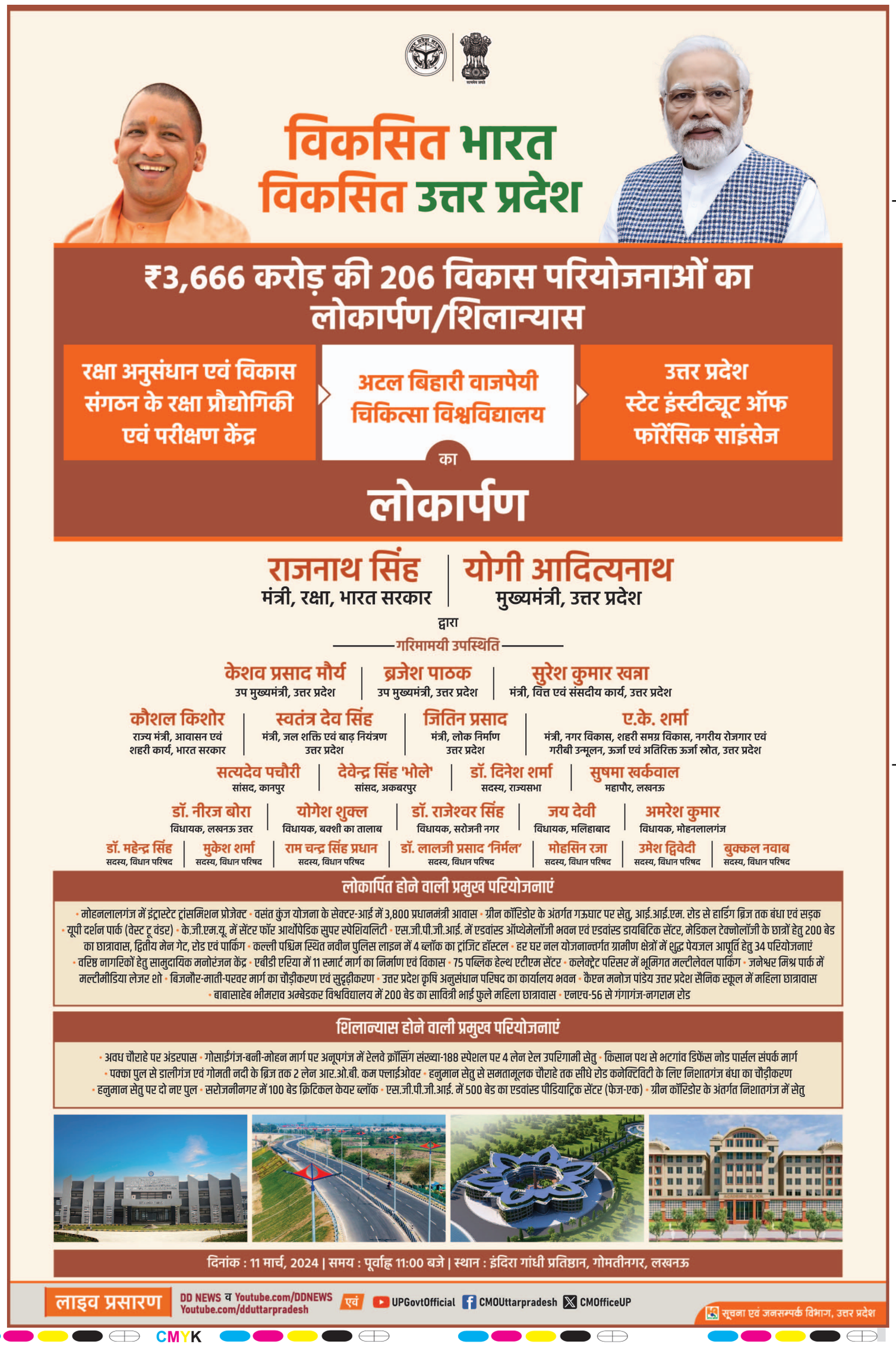

लाइट हाउस प्रोजेक्ट का प्रधानमंत्री ने किया लोकार्पण

लाइट हाउस प्रोजेक्ट लखनऊ बना देश के निर्माण क्षेत्र में मील का पत्थर : निदेशक सूडा

- हजारों चेहरों पर दिखी अपना घर मिलने की खुशी
- मलिहाबाद विधायक श्रीमती जया देवी ने किया लाभार्थियों को चाबी वितरण

(चर्चित राजनीति/संवाददाता)

लखनऊ। 10 मार्च साल 2024 का दिन 1,040 परिवारों के लिए यादगार बन गया है। अपने आशियाने के लिए जद्दोजहद कर रहे इन परिवारों को आखिरकार प्रधानमंत्री आवास योजना-शहरी के अंतर्गत उनके सपनों का घर मिल गया। आपको बताते दें कि अपने दो दिवसीय दौरे पर आए माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने आज आजमगढ़ से वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से लाइट हाउस प्रोजेक्ट का लोकार्पण किया। आजमगढ़ में माननीय प्रधानमंत्री जी के लाइट हाउस प्रोजेक्ट का लोकार्पण करते ही अवध विहार योजना तालियों की गडगड़ाहट से गूंज उठी। मौके पर मौजूद बड़ी संख्या में लाभार्थियों के चेहरे की खुशी देखते ही बन रही थी। इसके साथ ही मंच पर विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित मलिहाबाद की विधायक श्रीमती जया देवी, निदेशक सूडा डा. अनिल कुमार, सिटी मजिस्ट्रेट श्री सिद्धार्थ, वित्त नियंत्रक सूडा श्री संजीव गुप्ता भी इस ऐतिहासिक पल के साक्षी बने। इस अवसर पर विधायक श्रीमती जया देवी ने कहा कि माननीय प्रधानमंत्री जी व यशस्वी मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी के नेतृत्व में देश व प्रदेश का चहुंमुखी विकास हो रहा है। एक ओर जहां युवाओं के लिए रोजगार के नवीन अवसर सृजित किए जा रहे हैं तो दूसरी ओर दुर्बल आय वर्ग के लोगों के लिए उनके घर का सपना भी सरकार साकार कर रही है। उक्त अवसर पर निदेशक सूडा डा. अनिल कुमार ने उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि राज्य नगरीय विकास अभिकरण सूडा द्वारा प्रधानमंत्री आवास योजना-शहरी के अंतर्गत लाइट हाउस प्रोजेक्ट का निर्माण कराया गया है। उक्त योजना में 1,040 आवास बनाए गए हैं। इन आवासों के निर्माण में नवीनतम तकनीकी का प्रयोग किया है। ये मकान आपदारोधी व पर्यावरण के अनुकूल हैं। देश में पीवीसी स्टे इन प्लेस फॉमवर्क तकनीकी का प्रयोग लखनऊ सहित छह अन्य शहरों में किया गया है। लखनऊ में बना लाइट हाउस प्रोजेक्ट प्रदेश ही नहीं देश के निर्माण क्षेत्र में मील का पत्थर साबित होगा। निदेशक सूडा ने आगे कहा कि आने वाले दिनों में जल्द ही कैम्प का आयोजन किया जाएगा। इन कैम्पों के माध्यम से लाभार्थियों का सहयोग कर कागजी खानापूर्ति पूरी की जाएगी, जिससे की लाभार्थियों को जल्द से जल्द उनके आवासों का कब्जा मिल सके।

लाभार्थियों को मिली आवास की चाबी

प्रधानमंत्री आवास योजना-शहरी के अंतर्गत निर्मित लाइट हाउस प्रोजेक्ट के लोकार्पण के साथ ही अवध विहार योजना में लाभार्थियों को चाबी वितरण भी किया गया। इस आयोजन में मलिहाबाद की विधायक श्रीमती जया देवी व निदेशक सूडा ने लाभार्थियों को उनके आवासों की चाबी सौंपी। उक्त कार्यक्रम में श्री रामपाल यादव, श्रीमती रुकैया बानो, श्रीमती कमला श्रीवास्तव, श्री राहुल राय, श्रीमती पूनम, श्रीमती पूजा देवी, श्री मिश्रीलाल, श्रीमती लक्ष्मी सोनी, श्रीमती कामिनी द्विवेदी व श्रीमती आकांक्षा सिंह को उनके आवास के चाबी सौंपी गई।

क्या है लाइन हाउस प्रोजेक्ट

आपको बताते चलें कि आवासन एवं शहरी कार्य मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा ग्लोबल हाऊसिंग टेक्नोलॉजी चौलेन्ज-इण्डिया के अन्तर्गत लाइट हाऊस प्रोजेक्ट अवध विहार योजना, लखनऊ के सेक्टर-5 में निर्मित किया गया है, जिसका क्षेत्रफल दो हेक्टेयर है। लाइट हाऊस प्रोजेक्ट का शिलान्यास माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी द्वारा दिनांक 01.01.2021 को किया गया एवं दिनांक 04.01.2021 से लाइट हाउस प्रोजेक्ट के निर्माण का कार्य प्रारम्भ किया गया। लाइट हाऊस प्रोजेक्ट का निर्माण नवीन तकनीक PVC Formwork with Pre-Engineered Steel Structural System के माध्यम से किया गया है। इस तकनीकी का प्रयोग दुनिया के चुनिंदा देशों में होता है। इसके माध्यम से बेहद कम समय भवन निर्माण का कार्य पूरा किया जाता है। इस तकनीकी का प्रयोग कनाडा जैसे देशों में किया जा रहा है। लाइट हाउस प्रोजेक्ट में 34.50 वर्गमी. कारपेट एरिया के कुल 1040 भवन सम्मिलित हैं, जो स्टिल्ट प्लस 13 प्रकार के चार बहुमंजिला ब्लाकों में निर्मित हैं। उक्त परियोजना में आवास के साथ-साथ कम्यूनिटी सेन्टर, कॉमर्शियल सेन्टर, सीवरेज ट्रीटमेन्ट प्लान्ट (एसटीपी), पेयजल, ड्रेनेज, आन्तरिक सडकें, रेन वाटर हार्वेस्टिंग, सोलर लाईट, खुले हरित क्षेत्र, पार्किंग इत्यादि सुविधाएँ भी लाभार्थियों को मिलेंगी। परियोजना की कुल निर्माण लागत 130.90 करोड़ रुपए है, जिसमें समस्त अवस्थापना सहित प्रति आवास लागत 12.59 लाख रुपए है। परियोजना हेतु भारत सरकार द्वारा केन्द्रांश 1.50 लाख रुपए के अतिरिक्त केन्द्रीय टीआईजी के रूप में 4.00 लाख रुपए अतिरिक्त दिया गया है। इसी प्रकार राज्य सरकार द्वारा देय राज्यांश 1.00 लाख रुपए के अतिरिक्त राज्य टीआईजी के रूप में 1.33 लाख रुपए राज्य सरकार द्वारा दिया गया है। इस प्रकार परियोजना में कुल 7.83 लाख रुपए प्रति आवास का शासकीय अनुदान दिया गया है। अवशेष धनराशि 5.26 लाख रुपए लाभार्थी द्वारा वहन की गयी है। परियोजना में निर्मित होने वाले 1040 आवासों के सापेक्ष समस्त आवासों का आवंटन नियमानुसार पूर्ण कर लिया गया है।

लखनऊ कौशल महोत्सव में 6300 युवाओं को जॉब ऑफर मिले

(संवाददाता) लखनऊ। राष्ट्रीय कौशल विकास निगम एनएसडीसी द्वारा दो दिवसीय लखनऊ कौशल महोत्सव का आयोजन भाजपा वरिष्ठ नेता नीरज सिंह के संयोजन से सफलतापूर्वक संपन्न हुआ जिसमें 6300 युवाओं को जॉब ऑफर दिए गए। जॉब ऑफर प्राप्त कर युवाओं ने खुशी व्यक्त करते हुए रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, भाजपा नेता नीरज सिंह और एनएसडीसी के अधिकारियों और कंपनियों का आभार किया। समापन अवसर पर हजारों की संख्या में उपस्थित युवाओं को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि केंद्रीय रक्षा मंत्री और लखनऊ के जनप्रिय सांसद राजनाथ सिंह ने लखनऊ संसदीय निर्वाचन क्षेत्र में रोजगार मेंले के आयोजन के लिए सभी आयोजकों का धन्यवाद व्यक्त करते हुए कहा कि लखनऊ में रोजगार मेंले के आयोजन के लिए मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। लखनऊ में, उसके आसपास के क्षेत्र में और पूरे उत्तर प्रदेश के युवाओं को इस पहल से बड़ी मात्रा में रोजगार हासिल हो रहा है। आज रोजगार मेले में जिन को रोजगार मिला है उन सभी नौजवानों का तथा उनके परिवार जनों को अपनी ओर से हार्दिक बधाई देता हूं और उनके उज्जवल भविष्य की हार्दिक कामना करता हूं।

'डिवाइन एजुकेशन कान्फ्रेन्स' में सम्मानित हुए छात्र

(चर्चित राजनीति/संवाददाता)

लखनऊ। सिटी मोन्टेसरी स्कूल, अशर्फाबाद कैम्पस द्वारा 'डिवाइन एजुकेशन कान्फ्रेन्स' का भव्य आयोजन विद्यालय के ऑडिटोरियम में किया गया। इस अवसर पर विद्यालय के छात्रों ने ईश्वर भक्ति से परिपूर्ण शिक्षात्मक-साँस्कृतिक कार्यक्रमों में अपनी अभूतपूर्व प्रतिभा से सभी को आश्चर्यचकित कर दिया। छात्रों ने अपने अभिभावकों के समक्ष विद्यालय द्वारा प्रदान की जा रही सर्वांगीण विकास की शिक्षा पद्धति का भरपूर प्रदर्शन करते हुए जीवन मूल्यों, विश्वव्यापी चिंतन, विश्व समाज की सेवा एवं उत्कृष्टता की अनूठी झलक दिखाई। इस अवसर पर विद्यालय के प्री-प्राइमरी व प्राइमरी के मेधावी छात्रों को प्रशस्ति पत्र व मेडल प्रदान कर सम्मानित किया गया, जिन्होंने वर्ष भर में विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं, साँस्कृतिक कार्यक्रमों, खेलकूद की प्रतियोगिताओं एवं वार्षिक परीक्षा में टॉप कर विद्यालय का गौरव बढ़ाया है। सी.एम.एस. की संस्थापिका-निदेशिका व प्रख्यात शिक्षाविद् डा. भारती गाँधी ने दीप प्रज्वलित कर समारोह का उद्घाटन किया। इस अवसर पर अभिभावकों को सम्बोधित करते हुए डा. गाँधी ने कहा कि घर, स्कूल व समाज का वातावरण बालक के ज्ञान प्राप्त करने के प्रमुख स्रोत ?हैं, जिनका बालकों के मन और बुद्धि पर व्यापक असर पड़ता है। ऐसे में यह जरूरी है कि घर व विद्यालय में नैतिक एवं आध्यात्मिक गुणों का वातावरण सदैव बना रहे, जिससे भावी पीढ़ी का संतुलित एवं सर्वांगीण विकास संभव हो। सी.एम.एस. अशर्फाबाद कैम्पस की प्रधानाचार्या तृप्ति द्विवेदी ने अभिभावकों के प्रति हार्दिक धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कहा कि सी.एम.एस. अपने छात्रों को भौतिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक तीनों प्रकार की शिक्षा देकर उन्हें टोटल क्वालिटी पर्सन बनाने के लिए सतत् प्रयास कर रहा है। इस प्रयास में हमें अभिभावकों का सहयोग निरन्तर मिल रहा है। इसके लिए हम अभिभावकों के हृदय से आभारी हैं।

बीजेपी की ओर झुके ठाकुर, सर्वे में खुलासा

लोकसभा चुनाव, ओबीसी पर दारोमदार

(संवाददाता) लखनऊ । लोकसभा चुनाव में समय बहुत कम बाकी है। राजनीतिक दल रणनीति बनाने में लगे हैं। देश के सबसे बड़े सूबे उत्तर प्रदेश में सियासी गर्मियां तेज हैं। दिल्ली की सत्ता का रास्ता उत्तर प्रदेश से होकर गुजरता है। यूपी फ्तेह के लिए सभी पार्टियां जी-जान लगा रही हैं। जीत के लिए सभी दल जातीय समीकरण साधने में लगे हैं।उत्तर प्रदेश में ओबीसी हो, मुस्लिम की हो या सवर्ण,सभी का यूपी की सियासत में अहम योगदान है। यूपी में ओबीसी पर दारोमदार रहता है, जिधर झुके, उधर फ्तेह होती रही है। दल सूबे में उम्मीदवार उतारते समय जातीय समीकरण का ख्याल जरूर रखते हैं। न्यूज चौनल इंडिया टीवी ने सीएनएक्स के साथ एक ओपिनियन पोल किया है।इस सर्वे के मुताबिक 80 सीटों वाले उत्तर प्रदेश में बीजेपी प्रचंड जीत हासिल करती नजर आ रही है। बीजेपी को राज्य में जातीय समीकरण में सबसे ज्यादा फायदा हो सकता है।यूपी के 82 फीसदी ठाकुर वोटर एनडीए के साथ जा सकते हैं। 7 फीसदी ठाकुर वोटर इंडिया अलायंस और 5 फीसद बीएसपी के पक्ष में हो सकता है।6 फीसदी ठाकुर वोटर अन्य के समर्थन में जा सकता है।उत्तर प्रदेश में 20 फीसदी के करीब मुस्लिम रहते हैं।यह वोट बैंक समाजवादी पार्टी, बहुजन समाज पार्टी और कांग्रेस के बीच रहता है। 80 में 36 सीटें ऐसी हैं, जहां मुस्लिम आबादी 20 फीसदी के करीब है। यूपी की 6 सीटें ऐसी हैं जहां मुसलमानों की आबादी 50 प्रतिशत से भी ज्यादा है।

अरबों बजट की संस्था के सब मामले दस मिनट में पास

(चर्चित राजनीति/संवाददाता)

लखनऊ। शहर की जानी मानी संस्था अंजुमन इस्लाहुल मुस्लिमीन की साधारण सभा की बैठक दस मिनट में निपटाई गयी। करोड़ो के बजट वाली सस्था के सब मामले को सदस्यों के पहुँचने से पहले ही दस मिनट में पास कर दिया गया ताकि ज्यादा लोग पहुँचकर ज्यादा सवाल न उठा सके यह बात राष्ट्रीय सामाजिक कार्यकर्ता संगठन के कनवीनर मोहम्मद आफाक ने सामाजिक कार्यकर्ताओं की इस सम्बंध में आयोजित एक बैठक में कही। बैठक में मुख्य रूप से मस्जिद, मदरसा, दरगाह व कब्रिस्तान बचाओ समिति उत्तर प्रदेश के अध्यक्ष हाजी मोहम्मद फहीम सिददीकी, इसार फाउण्डेशन के अध्यक्ष मौलाना इरशाद अहमद सिददीकी, सामाजिक कार्यकर्ता मोहम्मद अहमद, सलीम अनवर, व तुफैल अख्तर उपस्थित थे। मोहम्मद आफाक ने आगे कहा कि आज अंजुमन इस्लामुल मुस्लिम की साधारण सभा की इरादत नगर, डालीगंज स्थित मुमताज पी.जी. कॉलेज में मीटिंग थी।

विधानपरिषद चुनाव : बीजेपी ने बनाया संतुलन और समीकरण

कई को किया किनारे, नए को तवज्जो

(चर्चित राजनीति/संवाददाता)

लखनऊ। एमएलसी चुनाव के लिए प्रत्याशियों के नामों को तय करने में भाजपा ने लोकसभा चुनाव और क्षेत्रीय संतुलन को ध्यान में रखा है। सात नामों में पार्टी ने क्षेत्रीय प्रतिनिधित्व देने की कोशिश की है। समर्पित कार्यकर्ताओं को विधान परिषद भेजने की पहल कर पार्टी कार्यकर्ताओं व क्षेत्रीय लोगों को संदेश देने का काम किया है। लोकसभा चुनाव को देखते हुए सहयोगी तीन दलों जिसमें रालोद, सुभासपा और अपना दल एस को एक-एक सीट पर चुनाव लड़ने का मौका दिया है। पार्टी के सात प्रत्याशियों में पांच अगड़ी जातियों से हैं, जबकि दो ओबीसी से हैं। क्षेत्रीय संतुलन को ध्यान में रखते हुए पूर्वांचल में आजमगढ़ से विजय बहादुर पाठक तथा वाराणसी से धर्मेंद्र सिंह, पश्चिमी यूपी में मेरठ से मोहित बेनीवाल और बिजनौर से अशोक कटारिया, मध्य यूपी अवध क्षेत्र से संतोष सिंह तथा डा. महेंद्र कुमार सिंह लखनऊ से और बुंदेलखंड के झांसी से रामतीरथ सिंघल को प्रत्याशी घोषित किया है। इन सात नामों से ही पार्टी ने पश्चिमी यूपी, पूर्वांचल, अवध मध्य यूपी तथा बुंदेलखंड क्षेत्र को समायोजित कर दिया है।सात नामों में पांच प्रत्याशी अगड़ी जाति से हैं। संतोष सिंह और डा. महेंद्र कुमार सिंह क्षत्रिय, धर्मेंद्र सिंह भूमिहार, रामतीरथ सिंघल वैश्य तथा विजय बहादुर पाठक ब्राम्हण हैं। अशोक कटारिया गुर्जर तथा मोहित बेनीवाल जाट हैं। विजय बहादुर पाठक ब्राम्हण समाज से हैं। वर्तमान में एमएलसी हैं, कार्यकाल समाप्त होने वाला है। आजमगढ़ के निवासी हैं। वर्तमान में बीजेपी के प्रदेश उपाध्यक्ष हैं। डा. महेंद्र कुमार सिंह क्षत्रिय हैं। वर्तमान में एमएलसी हैं, कार्यकाल समाप्त होने वाला है। लखनऊ के निवासी हैं। प्रदेश सरकार में मंत्री रह चुके हैं। एमपी के चुनाव प्रभारी हैं।अशोक कटारिया गुर्जर हैं। वर्तमान में एमएलसी हैं, कार्यकाल समाप्त होने वाला है। बिजनौर के रहने वाले हैं। प्रदेश सरकार में पूर्व मंत्री रह चुके हैं। मोहित बेनीवाल जाट हैं। मेरठ के रहने वाले हैं। भाजपा पश्चिमी क्षेत्र के अध्यक्ष रह चुके हैं। भाजपा के प्रदेश उपाध्यक्ष हैं।धर्मेंद्र सिंह भूमिहार हैं। वाराणसी के रहने वाले हैं। पत्रकारिता से राजनीति में आए हैं। भाजपा के प्रदेश मीडिया सह प्रभारी हैं। रामतीरथ सिंघल वैश्य हैं। झांसी के रहने वाले हैं। झांसी नगर निगम के मेयर रहे हैं। संतोष सिंह क्षत्रिय हैं। लखनऊ के रहने वाले हैं। एलयू छात्रसंघ के अध्यक्ष रह चुके हैं। बीजेपी के प्रदेश उपाध्यक्ष हैं। भाजपा ब्रज क्षेत्र के प्रभारी हैं।

आबकारी टीम ने मारा द कांसेप्ट रेस्टोरेंट में छापा

- बिना ऑकेजनल बार लाइसेन्स परोसी जा रही थी मदिरा

(चर्चित राजनीति/संवाददाता)

लखनऊ। लोकसभा चुनाव एवं होली पर्व के दृष्टिगत उत्तर प्रदेश शासन व आबकारी आयुक्त के आदेश के क्रम में अवैध शराब की बिक्री,परिवहन पर पूर्णत: अंकुश लगाए जाने हेतु प्रवर्तन अभियान चलाया जा रहा है।09 मार्च की रात में सूचना मिली कि गोमतीनगर क्षेत्र में बिना ऑकेजनल बार लाइसेंस एफएल.-11 के द कॉन्सेप्ट रेस्टोरेंट में मदिरा पिलाई जा रही है। आबकारी अधिकारी राकेश सिन्ह के नेतृत्व मे आबकारी निरीक्षक विवेक सिंह व रजनीश प्रताप सिंह की टीम का गठन किया गया जिसमें एचसी नन्द किशोर तथा एचसी योगेन्द्र नाथ सिंह आदि सम्मिलित रहे। पत्रकारपुरम स्थित द कांसेप्ट रेस्टोरेंट में रात्रि 11 बजे दबिश दी गई तो वहां पर बिना ऑकेजनल बार लाइसेन्स के ही मदिरा परोसी जा रही थी। पत्रकार पुरम में स्थित विजयश्री टावर के थर्ड फ्लोर पर स्थित द कांसेप्ट रेस्टोरेंट में बिना ऑकेजनल बार लाइसेन्स के अवैध रूप से मदिरा परोसी जा रही थी। वहां पर कुल 09 बोतल विदेशी मदिरा व 24 कैन बियर रेस्टोरेंट के भीतर से बरामद की गई। उक्त प्रकरण में रेस्टोरेंट मैनेजर अजीमुसान खान पुत्र इब्राहिम निवासी निशातगंज लखनऊ समेत 02 अन्य अभियुक्तों दिवाकर व राम प्रकाश निवासी गोरखपुर तथा राम चन्द्र चौधरी व राम लाल चौधरी निवासी सीतापुर को अवैध रूप से शराब परोसते हुए गिरफ्तार किया गया तथा गिरफ्तार अभियुक्तों के विरुद्ध आबकारी अधिनियम की धारा 60 व आईपीसी की धारा 419/420 के अंतर्गत गोमतीनगर थाने में मुकदमा पंजीकृत करते हुए जेल भेजा गया।

अनुपूरक पुष्टाहार उत्पादन इकाईयों बनाया जायेगा और अधिक सुदृढ व सशक्त

टीएचआर इकाइयों के संचालन हेतु जिला स्तरीय संचालन समिति का गठन

- पुष्टाहार की आंगनबाड़ी केन्द्रों पर की जाती है आपूर्ति

(चर्चित राजनीति/संवाददाता)

लखनऊ । उत्तर प्रदेश के उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य के नेतृत्व व निर्देशन में अनुपूरक पुष्टाहार उत्पादन इकाईयों टीएचआर प्लान्ट्स को और अधिक सुदृढ व सशक्त बनाया जाने की कार्यवाही की जा रही है।टीएचआर इकाइयों के बेहतरव सफल संचालन हेतु सम्बंधित जिले के जिला अधिकारी की अध्यक्षता में जिला स्तरीय संचालन समिति का गठन किया गया है । महिलाओं के माध्यम से पुष्टाहार उत्पादित कर आंगनबाड़ी केन्द्रों पर आपूर्ति की जाती है। प्रदेश के 43 जनपदों में टीएचआर योजना का संचालन किया जा रहा है, जिसके अन्तर्गत समूह की महिलाओं के माध्यम से पुष्टाहार उत्पादित कर आंगनबाड़ी केन्द्रों पर आपूर्ति का कार्य किया जा रहा है। 43 जनपदों में 204 टीएचआर इकाईयां स्थापित की गयी है,जिनके सुचारू रूप से संचालन हेतु समय-समय पर दिशा-निर्देश जारी किए गए हैं। बाल विकास एवं पुष्टाहार विभाग द्वारा एक सुदृढ व निश्चित बाजार इन इकाईयों को प्रदान किया जाता रहा है। विभाग में नियमित लाभार्थियों की संख्या लगभग 2 करोड़ है। यह निश्चित संख्या स्वयं सहायता समूहों के द्वारा संचालित व्यवसाय का भाग है और व्यवसाय को निरंतरता तथा विस्तृत बाजार प्रदान करता है। शासन स्तर पर महसूस किया गया कि ऐसी स्थिति में राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन को अपने कार्य मॉडल को अधिक क्षमता के साथ विकसित करने की आवश्यकता है, जिससे इकाईयां निर्धारित कास्टनॉर्म के अन्तर्गत पुष्टाहार का उत्पादन कर सके। यह भी जरूरी समझा गया कि राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन द्वारा अपनी इकाईयों को कॉस्ट एफिसिएन्ट बनाने के लिए बाजार में उपलब्ध मार्केटिंग स्ट्रेटजी तथा मॉडल पर अध्ययन करते हुए महिला स्वयं सहायता समूहों द्वारा संचालित अनुपूरक पुष्टाहार उत्पादन इकाईयों को और सुदृढ और सशक्त बनाने के सम्बन्ध में कार्यवाही की जानी आवश्यक है। स्वयं के स्पेसिलाइजेशन को विस्तृत करके इन स्वयं सहायता समूहों द्वारा खुले बाजार में अपने सामान की आपूर्ति की जा सकती है। यह जरूरी समझा गया है कि इस हेतु ग्राम्य विकास विभाग द्वारा किसी विषय विशेषज्ञ कन्सलटेन्ट से बिजनेस मॉडल रि स्ट्रक्चर कराये जाने सम्बन्धी अध्ययन कराया जाना होगा। राज्य की उत्पादन इकाईयों को प्रारम्भिक रूप से मजबूत तथा महिला स्वयं सहायता समूहों को स्वावलम्बी व कार्य को सस्टेनेबल बनाने की आवश्यकता के मद्देनजर इस आलोक मे टीएचआर प्लाण्ट के सुचारू रूप से संचालन हेतु जनपद स्तरीय स्टेयरिंग कमेटी का गठन किया गया है। सम्बंधित जिले के जिलाधिकारी समिति के अध्यक्ष नामित किए गए हैं व मुख्य विकास अधिकारी सदस्य सचिव बनाये गये हैं।अधिशाषी अभियन्ता विद्युत, उपायुक्त स्वतरू रोजगार,उपायुक्त उद्योग, जिला कार्यक्रम अधिकारी,उप-सम्भागीय विपणन अधिकारी व पीओ नेडा समिति के सदस्यबनाये गये हैं। ग्राम्य विकास आयुक्त जीएस प्रियदर्शी ने बताया कि समिति को शासन द्वारा जारी दिशा- निर्देशों क्रम में अग्रेत्तर कार्यवाही सुनिश्चित कराने की अपेक्षा की गयी है।

आयोजित हुई पहली दिव्यांग बच्चों के अभिभावकों से परामर्श बैठक

चर्चित राजनीति/संवाददाता

कछौना/हरदोई। कछौना बीआरसी सभागार में दिव्यांग बच्चों के अभिभावकों के साथ परामर्श बैठक आयोजित की गई जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में संजय मिश्रा उपस्थित रहे। बैठक में स्पर्श राजकीय दृष्टिबाधित बालक इंटर कॉलेज मोहन रोड लखनऊ के विद्यार्थी सोनू गुप्ता ने दिव्यांग बच्चों की शिक्षा में आने वाली विभिन्न समस्याओं पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा जनपद हरदोई में दिव्यांग बच्चों की शिक्षा व्यवस्था में सुधार लाने की आवश्यकता है। शासन स्तर से दिव्यांग बच्चों की शिक्षा के लिए तो ध्यान दिया जा रहा है लेकिन जमीनी स्तर पर अधिकारियों के द्वारा दिव्यांग बच्चों की शिक्षा पर ध्यान नहीं दिया जा रहा है। साथ ही जनपद हरदोई में दिव्यांग बच्चों के द्वारा उनकी शिक्षा में जो उपकरण इस्तेमाल होते हैं, वह उपकरण उन्हें नहीं दिए जा रहे हैं। उन्होंने उन उपकरणों के बारे में वहां पर बैठे अभिभावकों को बताया जिसमें उन्होंने सक्षम म अव म 5 के बारे में बताया। उन्होंने बताया कि इस डिवाइस से अगर कक्षा में कोई शिक्षक कुछ बोल करके किताब से पढ़ रहा है तो इस डिवाइस की सहायता से वह शिक्षक के द्वारा बताई जा रही बातों को रिकॉर्ड करके बाद में भी बार-बार सुन करके उसे चीज को याद कर सकता है। उन्होंने कहा अगर हम लोगों के पास स्मार्टफोन होता तो हमें पढ़ने में और भी सहूलियत होती। उन्होंने प्रशासन से मांग की कि उन्हें स्मार्टफोन वितरित किए जाएं। उन्होंने कहा कि नगर पंचायत कछौना प्रशासन के स्तर से दिव्यांग जनों के लिए कोई कार्य नहीं किए गए हैं। साथ ही संजय मिश्रा ने दिव्यांग बच्चों और उनके अभिभावकों को संबोधित करते हुए दिव्यांग के कर्म पर प्रकाश डाला और साथ ही दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम 2016 के बारे में भी विस्तार से वहां पर बैठे अभिभावकों को जानकारी दी। विजय सिंह ने कहा कि सभी दिव्यांग बच्चों को उनके अभिभावक शत प्रतिशत विद्यालयों में दाखिला करवाने के लिए आगे आए और उनसे संपर्क करें।इस अवसर पर ब्लॉक कछौना के विभिन्न ग्रामों से दिव्यांग बच्चों सहित उनके अभिभावक उपस्थित रहे, बैठक का संचालन विजय सिंह ने किया।

कृषक सभागार में पीएम कुसुम के अंतर्गत सोलर पम्प स्वीकृति पत्र वितरण कार्यक्रम का हुआ आयोजन

चर्चित राजनीति/संवाददाता

हरदोई। महात्मा बुद्ध कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कसया, जनपद कुशीनगर का श्री योगी आदित्य नाथ जी, मुख्यमंत्री उवप्रव द्वारा शिलान्यास कार्यक्रम का सजीव प्रसारण एवं पी0एम0 कुसुम योजनान्तर्गत सोलर पम्प स्वीकृति पत्र वितरण कार्यक्रम का आयोजन कृषक सभागार निकट बिलग्राम चुगी हरदोई में किया गया । उक्त कार्यक्रम में कृषक मनोज कुमार शुक्ला, पिहानी, सगीता देवी हरपालपुर, सन्तोष सिंह पिहानी 10 एच0पी0, राघवेन्द्र कुमार बिलग्राम 7.5 एच0पी0, ज्ञानेन्द्र कुमार बाजपेई कोथावा 3एच0पी0 को एवं 50 से अधिक कृषकों को विभिन्न क्षमता वाले सोलर पम्प का स्वीकृति पत्र दिया गया । डा0 नन्द किशोर उप कृषि निदेशक के द्वारा अवगत कराया गया कि प्रधानमंत्री किसान उर्जा सुरक्षा एवं उत्थान महाअभियान (पी0एम0 कुसुम) सोलर पम्प योजना के अन्तर्गत 60 प्रतिशत अनुदान पर सोलर पम्प उपलब्ध है। जनपद हरदोई में वर्ष 2014 से वर्ष 2023 तक कुल 1020 विभिन्न क्षमता वाले सोलर पम्प की स्थापना कृषकों के प्रक्षेत्र पर की गयी पी0एम0 कुसुम सोलर पम्प योजनान्तर्गत वर्ष 2023-24 में विभिन्न क्षमता वाले 836 सोलर पम्प का लक्ष्य जनपद हरदोई को प्राप्त हुआ, जिसके क्रम में 430 कृषको के द्वारा सोलर पंप की सम्पूर्ण धनराशि बैंक में जमा कर दी गयी है एवं नामित कम्पनी के द्वारा वर्ष 2023-24 में 24 कृषकों के प्रक्षेत्र पर सोलर पम्प स्थापित किये जा

चुके है शेष सोलर पम्प स्थापित किये जाने की कार्यवाही कमिक है वर्ष 2024-25 हेतु जनपद हरदोई को 1990 विभिन्न क्षमता वाले सोलर पम्प का लक्ष्य प्राप्त हुआ है जिसकी बुकिंग प्रक्रिया चालू है । जनपद के 214 कृषकों के द्वारा सोलर पम्प हेतु बुकिंग की जा चुकी है कृषक भाईयों से अनुरोध है कि अनुदान पर सोलर पम्प की ऑनलाइन बुकिंग हेतु विभागीय वेबसाइट www.agriculture.up.gov.inपद पर वित्तीय वर्ष 24-25 सोलर पम्प हेतु बुकिंग करें लिंक पर क्लिक कर ऑनलाइन बुकिंग कर सकते है । उक्त सजीव प्रसारण कार्यक्रम में 200 से अधिक कृषकों के द्वारा प्रतिभाग किया गया।

23वें श्री श्याम फाल्गुन महोत्सव में गौरी शरण और सावन नागदा के मधुर भजनों पर भक्त झूम उठे

चर्चित राजनीति/संवाददाता

सुल्तानपुर। श्री श्याम प्रभु खाटू वाले के 23वें श्री श्याम फाल्गुन महोत्सव में गौरी शरण और सावन नागदा के मधुर भजनों पर भक्त झूम उठे । श्री श्याम सत्संग मंडल सुल्तानपुर के तत्वाधान में आयोजित फाल्गुन महोत्सव शनिवार की रात श्री श्याम प्रभु खाटू वाले के नाम रही । इस वर्ष बाहर से आए हुए कलाकारों द्वारा सजाए गए भव्य दरबार में बैठे खाटू नरेश की नयनाभिराम छवि को एक टक निहारते हुए श्रद्धालुओं ने पंक्तिबद्ध होकर दर्शन एवं पूजन किया । कार्यक्रम का प्रारंभ मंडल के सदस्य अंकुर अग्रवाल द्वारा सपत्नीक विधि विधान पूर्वक पूजन अर्चन कर ज्योत प्रज्वलित कर किया गया । इसके पश्चात मंडल के ही सदस्य राजवीर श्रीवास्तव ने गणेश वंदना , हनुमत वंदना की प्रस्तुति दी तत्पश्चात इंदौर मध्य प्रदेश से पधारी स्वर कोकिला गौरी शरण की प्रस्तुति ष्पलकें ही पलकें बिछाएंगे जिस दिन श्याम प्यारे घर आएंगेष् तथा ष्हे गिरधारी कृष्ण मुरारी मेरी नैया कर दो पर खिवैया बन जाओ पर श्रद्धालु भाव विभोर हो गए। नीमच मध्य प्रदेश से पधारे सावन नागदाके सुरीले स्वरों से लोग मंत्र मुग्ध हो गए । उनके आकर्षक भजनों ष्मेरी झोपड़ी के भाग्य आज खुल जाएंगे श्याम आएंगेष् ष्हम हारे हारे हारे तुम हारे के सहारेष् आदि भजनों पर लोग भाव विभोर हो गए तथा ष्आज बिरज में होली रे रसियाष् ष्मुकुट सिर मोर का मेरे चित चोर काष् ष्राधा की पायल छम छम बाजेष् आदि भजनों पर भक्त थिरकने पर मजबूर हो गए तथा जमकर नृत्य किया । चिराग ग्रुप दिल्ली के द्वारा सजीव चित्रण झांकियां के माध्यम से अयोध्या के श्री रामलला के श्यामल स्वरूप का बड़ा ही मनमोहन मंचन किया गया इसके अतिरिक्त शिव पार्वती की झांकी हनुमान जी के चार स्वरूपों की एक साथ प्रस्तुति दी गई तथा राधा कृष्ण की विभिन्न स्वरूपों पर आधारित महाराष्ट्र की झांकी पर भक्त थिरके और आनंदमय होकर नित्य किया ।कार्यक्रम स्थल पर आयोजक मंडल द्वारा खाटू मेले के नजारे के चित्र तोरण द्वार पर राजस्थानी पगड़िया ध्वज संग परिवार सहित सेल्फी लेने से लोग नहीं चूके । लोगों ने राधे जी की रसोई भोजन प्रसाद का लुफ्त भी लिया । इस वर्ष श्रद्धालुओं की संख्या विगत वर्षों से कहीं अधिक रही महोत्सव में आर पी पाण्डेय डीआईजी (सीआरपीएफ) , प्रशांत सिंह सीओ (जयसिंहपुर) , भाजपा के डॉ सीता शरण , डॉ एम पी सिंह , रामचंद्र मिश्र , करुणा शंकर द्विवेदी , जगजीत सिंह छंगू , नगर विधायक पुत्र पुलकित सिंह , नगर पालिका परिषद अध्यक्ष प्रवीण अग्रवाल , भाजपा नगर अध्यक्ष आकाश जायसवाल के अतिरिक्त राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के विभाग प्रचारक प्रकाश , जिला प्रचारक आशीष , डॉ रमाशंकर मिश्र आदि के अतिरिक्त बार काउंसिल के सदस्य आशीष अग्रवाल एडवोकेट , कांग्रेस नेता मुन्ना सिंह त्रिशुंडी , प्रदेश सचिव अपराध निरोधक समिति अमर बहादुर सिंह आदि नगर के गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति उल्लेखनीय रही । कार्यक्रम को सफल बनाने में अशोक अग्रवाल , पिंटू अग्रवाल , मुकेश अग्रवाल , आलोक कनोडिया , अशोक मुरारका , रजत कनोडिया , श्याम भालोठिया , गोमती प्रसाद मोदनवाल , राजकुमार अग्रवाल , गंगा प्रसाद कसौधन , रवि जायसवाल आदि की भूमिका उल्लेखनीय रही । कार्यक्रम का संचालन राजवीर श्रीवास्तव द्वारा किया गया ।

हरियावां सर्किल क्षेत्र में पुलिस अधीक्षक ने भ्रमण कर जानी सुरक्षा की हकीकत

चर्चित राजनीति/संवाददाता

हरदोई। आगामी त्योहारों व लोकसभा चुनाव के दृष्टिगत जनपद में कानून एवम् व्यवस्था की प्रभावी तैयारियों के परिपेक्ष्य में हरियावां सर्किल क्षेत्र में दंगा नियंत्रण योजना के क्रियान्वयन के दृष्टिगत पुलिस अधीक्षक हरदोई द्वारा थाना पिहानी क्षेत्र के प्रमुख चौराहों, संवेदनशील स्थानों, धार्मिक स्थलों आदि पर दंगा नियंत्रण योजना का निरीक्षण कर सभी अधिकारी/कर्मचारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिये गए, जिससे जनपद में त्योहारों व लोकसभा चुनाव के दौरान कानून व्यवस्था बनाए रखने में किसी प्रकार का व्यवधान उत्पन्न न हो, इस दौरान प्रशासनिक अधिकारी व अपर पुलिस अधीक्षक पश्चिमी, क्षेत्राधिकारी शाहाबाद, क्षेत्राधिकारी हरियावां,

प्रभारी निरीक्षक अभिसूचना इकाई , प्र0नि0 पिहानी, थाना प्रभारी हरियावां सहित समस्त पुलिस फोर्स दंगा नियंत्रण उपकरणों के साथ मौके पर मौजूद रही।

क्षेत्र मे दो अलग अलग सड़क दुर्घटनाओ में दो लोगो की मौत

चर्चित राजनीति/संवाददाता

शाहाबाद (हरदोई) । क्षेत्र में अलग अलग स्थानो पर हुई दो सड़क दुर्घटनाओ में दो लोगों की मौत हो गई ।पुलिस ने दोनो शवों को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। घटना के बाद मृतक के परिजनो में कोहराम मचा है। पहली घटना स्थानीय मोहल्ला गढी मे घटित हुयी जबकि दूसरी घटना लोनी चीनी मिल के पास घटी। मिली जानकारी के अनुसार निकटवर्ती जनपद शाहजहांपुर अन्तर्गत थाना सेहरामऊ दक्षिणी के ग्राम नौसारा निवासी धर्मेंद्र (30) पुत्र राम प्रसाद रोजा मिल में मजदूरी का कार्य करता था। बीते शनिवार की शाम को काम से छुट्टी होने के बाद बाइक से मझिला थाना क्षेत्र के ग्राम चठिया अपने ननिहाल जा रहा था। जैसे ही वह नगर के मोहल्ला गढ़ी के पास पहुंचा तभी अज्ञात वाहन ने उसे जोरदार टक्कर मार दी जिसके परिणामस्वरूप उसकी मौत हो गई। बताया जाता है कि मृतक विवाहित था तथा उसके दो छोटे छोटे बच्चे हैं। इस दर्दनाक घटना से उसके परिवार में कोहराम मचा हुआ है। दूसरी घटना लोनी चीनी मिल के पास घटित हुयी जहा हरियांवा थाना क्षेत्र के ग्राम शाहपुर बिनौरा मजरा गुलरिया निवासी अरविंद पुत्र राम बहादुर दो दिन पूर्व अपनी बहन को छोड़ने बाइक से उसकी ससुराल दिलावलपुर जनपद शाहजहांपुर गया था। बहन को छोडने के उपरांत रविवार के दिन प्रात: वह वापस अपने घर ग्राम गुलरिया जा रहा था। जैसे ही वह लोनी चीनी मिल के पास पहुंचा तभी विपरीत दिशा से आ रहे अज्ञात वाहन ने उसे टक्कर मार दी जिसके फलस्वरूप वह बुरी तरह घायल हो गया। उसे उपचार के लिए सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र ले जाया गया जहां डाक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। सूचना पर पहुंची कोतवाली पुलिस ने दोनों शवों को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है।

रानी की बेवफाई ने राजा भर्तृहरि को बना दिया महान साधु

चर्चित राजनीति/संवाददाता

हरदोई । कोथावा के सैर गांव मे सैरेश्वर महादेव मंदिर पर चल रही सात दिवसीय श्रीमद भागवत कथा मे रविवार को कथा व्यास मुकेशानन्द ने कहा कि भरथरी राजा था ।भरथरी की रानी का नाम पींगला था। सुंदरता में परी से कम नहीं थी, परंतु चरित्रहीन थी। राजा भरथरी पींगला से बहुत प्यार करता था तथा अत्यंत विश्वास करता था ।एक बार गोरखनाथ वेश बदलकर अन्य संत के रूप में राजा भरथरी जी के पास गए। उनको एक अमर फल देकर कहा कि जो इस फल को खा लेगा, वह लंबी आयु जीयेगा और युवा बना रहेगा। यह कहकर संत जी कुछ दक्षिणा लेकर चले गए। फल की कीमत नहीं ली। राजा ने विचार किया कि यदि मेरे से पहले मेरी पत्नी की मृत्यु हो गई तो मैं जीवित नहीं रह पाऊँगा। इसलिए यह फल पींगला रानी को देता हूँ। वह फल अपनी रानी को दे दिया तथा उसके गुण बताए। रानी का प्रेम उस दरोगा से था। रानी ने वह फल अपने प्रेमी दरोगा को दे दिया और उसके गुण बताए और कहा कि मैं आपकी लम्बी आयु देखना चाहती हूँ। मैं आपके बिना जीवित नहीं रह पाऊँगी। दरोगा उसी शहर की वैश्या के पास जाता था। उससे अत्यधिक प्रेम करता था। दरोगा ने वह अमर फल अपनी प्रेमिका वैश्या को दे दिया तथा उसके गुण बताए। वैश्या ने विचार किया कि इस नगरी का राजा बहुत दयालु तथा न्यायकारी है ।ऐसा राजा लम्बी आयु तक जीवित रहेगे तो जनता भी सुखी रहेगी। यदि मैंने खा लिया तो और अधिक समय तक यह पाप करूँगी। उस वैश्या ने वह फल राजा भरथरी को दे दिया तथा उसके गुण बताए। राजा ने पूछा कि आपको यह फल किसने दिया है ? वैश्या ने बताया कि आपके घोड़ों के मुखिया (दरोगा) ने दिया है। राजा ने दरोगा को बुलाया। पूछा तो उसने बताया कि रानी ने दिया है। राजा ने रानी से महल में जाकर पूछा कि क्या आपने वह फल खा लिया था ? रानी कुछ नाराज अंदाज से बोली कि

हाँ! खा लिया था। आप हमेशा शक क्यों करते हो ? राजा ने उसी समय मंत्री-महामंत्री, अन्य दरबारियों (कार्यालय के उच्च अधिकारियों) को तथा वैश्या और दरोगा को बुलाया। दरोगा से पूछा कि यह फल आपको किसने दिया था ? दरोगा ने काँपते हुए कहा कि रानी ने दिया था ।राजा का अंधेरा दूर हुआ। पींगला रानी ने क्षमा याचना की ।अपनी सब गलती भी स्वीकार कर ली ।भरथरी उस दिन राज्य त्यागकर गोरखनाथ जी के डेरे में चला गया तथा परम भक्त बना। इस मौके पर हर्षित सिंह जयकरन सिंह, विनय सिंह, संतोष सिंह, प्रभाकर सिंह,सकुंतला सिंह, रूबी सिंह, उमा सिंह, निर्मला सिंह, प्रेमा सिंह,उषा सिंह, लवी सिंह सहित दर्जनों श्रोता भक्तगण मौजूद रहे।

डीसीएम और बाइक की टक्कर मे बाइक सवार की मौत

चर्चित राजनीति/संवाददाता

स्योहारा। बेटी से मिलकर वापस आ रहा था मृतक स्योहारा क्षेत्र ग्राम राघुवाला निवासी जयप्रकाश पुत्र रामगोपाल सिंह अपनी बेटी से मिलने ग्राम चकराजमल थाना धामपुर गया था।

रविवार की दोपहर मिलकर अपने ग्राम रघु वाला थाना ठाकुरद्वारा जा रहा था। जब उसकी बाइक रामगंगा के पुल के पास पहुंची तभी तेज रफ्तार की डीसीएम कार ने बाइक में जोरदार टक्कर मार दी। टक्कर इतनी जबरदस्ती थी की बाइक पूरी तरह टूट गई और जयप्रकाश सिंह आयु लगभग 52 वर्ष की मौके पर ही मौत हो गई। थाना प्रभारी जीत सिंह पुलिस दल के साथ मोका पर पहुंचे और शव का पांचनामा भरकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया।

निष्पक्ष व निष्ठावान पूर्वक थाना प्रभारी बने जीत सिंह

चर्चित राजनीति/संवाददाता

स्योहारा। जिला बिजनौर के तेज तर्रार पुलिस कप्तान नीरज कुमार जादौन ने जिले की कानून व्यवस्था को और अधिक दुरुस्त करते हुए कई निरीक्षकों, उपनिरीक्षकों के क्षेत्र में फेरबदल करते हुए कुछ अधिकारियों को थानों का इंचार्ज बनाया। जानकारी के अनुसार मीडिया सेल प्रभारी इंस्पेक्टर जीत सिंह को थाना स्योहारा के प्रभारी निरीक्षक पद पर तैनात किया गया है। जीत सिंह, आज से थाना स्योहारा का चार्ज सम्भालेंगे। नवागत थाना स्योहारा प्रभारी निरीक्षक जीत सिंह ने स्योहारा थाने का चार्ज संभालने

के बाद कहां की शासन प्रशासन के आदेशों का पालन करते हुए कानून का पालन करना व शांति व्यवस्था बनाए रखना मेरी प्राथमिकता होगी। छोटे से छोटे अपराधों पर भी मेरी पैनी नजर रहेगी। ताकि क्षेत्र में नही हो सके अपराध। वही कहा सभी पीड़ित को इंसाफ दिलाया जायेगा।

पुलिस अधीक्षक ने सोलह पुलिस कर्मियों की तैनाती में किया फेरबदल

पिहानी के वरिष्ठ उपनिरीक्षक तथा बघौली चौकी प्रभारी लाइन हाजिर

चर्चित राजनीति/संवाददाता

शाहाबाद (हरदोई)। कानून व्यवस्था को सुदृढ बनाने के उद्देश्य से पुलिस अधीक्षक केसी गोस्वामी ने सोलह पुलिस कर्मियों की तैनाती में फेरबदल कर दिया है। पिहानी कोतवाली मे तैनात वरिष्ठ उपनिरीक्षक तथा बघौली चौकी प्रभारी को लाइन हाजिर कर दिया गया है। पिहानी कोतवाली के वरिष्ठ उपनिरीक्षक दृगपाल सिंह गौर को लाइन हाजिर कर दिया गया है। उनकी जगह गैर जनपद से स्थानांतरित होकर रोहित कुमार पाण्डेय को तैनाती दी गई है।

संडीला कोतवाली से लगभग डेढ़ माह पहले लाइन हाजिर किए गए निरीक्षक नित्यानंद सिंह को अपराध शाखा का प्रभारी बनाया गया है। पुलिस लाइन में तैनात निरीक्षक प्रियंबद मिश्रा को आईजीआरएस सेल का प्रभारी बनाया गया है।

आईजीआरएस सेल के प्रभारी अनिल यादव को चुनाव सेल का प्रभारी बनाया गया है ।पुलिस लाइन में तैनात निरीक्षक विनोद कुमार को रिट सेल का प्रभारी बनाया गया है। निरीक्षक विद्यासागर पाल को मॉनीटरिंग सेल का प्रभारी बनाया गया है। उपनिरीक्षक जर्रार अंसारी को पुलिस लाइन से अरवल तथा उपनिरीक्षक फहीम खां को पुलिस लाइन से थाना बेनीगंज भेजा गया है। उपनिरीक्षक अभय कुमार सिंह को पुलिस लाइन से गौसगंज का चौकी प्रभारी बनाया गया है। गौसगंज चौकी प्रभारी अनिल कुमार को शाहाबाद कोतवाली में तैनाती दी गई है। टड़ियावां थाने में तैनात उपनिरीक्षक विजय कुमार मिश्रा को लाइन हाजिर किया गया है। थाना बघौली मे तैनात हेड कॉन्स्टेबल त्रियंबक दत्त गौड को पुलिस लाइन भेजा गया है।

किसानो के साथ खेल हुआ बिजली विभाग के कुछ वादे हुए फैल

चर्चित राजनीति/संवाददाता

स्योहारा। बिजली घर किसानों को संबोधित करते चौधरी गजेंद्र सिंह टिकैत, भारतीय किसान यूनियन के मासिक मीटिंग बिजली घर पर संपन्न हुई मीटिंग की अध्यक्षता ब्लॉक अध्यक्ष चौधरी गजेन्द्र सिंह टिकैत व संचालन हरिओम यादव ने किया

मीटिंग में किसानों को संबोधित करते हुए चौधरी गजेंद्र सिंह टिकैत ने बताया बिजली की समस्याओं मे जर्जर लाइन बदलवाने और घरेलू बिजली बिल गलत आ रहे हैं उन्हें ठीक करने तथा जिन किसानों ने बिजली के कनेक्शन कटवा दिए हैं उनको अभी तक नो ड्यूज नहीं मिल पा रहे जिन गांवों में क्षमता वृद्धि ट्रांसफार्मर चेंज होने हैं वह जल्द किए जाये उन्होंने कहा उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा किसानों को निजी नलकूप की बिजली फ्री तो कर दिया लेकिन शर्तों के साथ निजी नलकूपों पर मीटर लगाया जाए। उसके बाद रीडिंग में छूट बता रहे हैं इसमें किसानों को फसाने का काम कर रही है सरकार जो गलत है उत्तर प्रदेश सरकार किसानों के साथ शर्तें लागू न करें शर्तों से किसानों को बिजली फ्री का लाभ नहीं मिल पाएगा बिजली विभाग की ओर से एक्शन इ अरुण कुमार किसानों के बीच पहुंचे समस्याओं को सुना उन्होंने आश्वासन दिया 10 दिन के अंदर सभी समस्याओं का निस्तारण कर दिया जाएगा ब्लॉक अध्यक्ष ने साथ ही 14 मार्च को दिल्ली होने वाले एकदिवसीय आंदोलन में किसानों से अधिक से अधिक संख्या में भाग लेने की अपील की इस अवसर पर रामचरण सिंह प्रोफेसर रामोतार सिंह

इकरामु प्रधान वीरेंद्र प्रधान अमित चौधरी आलोक सिंह सोनू चौधरी भूपेंद्र सिहं विजेंदर त्यागी रतुल त्यागी आदि मौजूद रहे।

एसडीएम व तहसीलदार ने बूथ का निरीक्षण किया, दिये निर्देश

चर्चित राजनीति/संवाददाता

सण्डीला/हरदोई। उप जिलाधिकारी तान्या सिंह ने विधान सभा 161 सण्डीला के मतदान केंद्र भगवान बुद्ध इंटर कॉलेज , नगर पालिका परिषद संडीला के बूथ का निरीक्षण किया और सभी बीएलओ को यह निर्देश दिया की 18 वर्ष पूर्ण कर चुके व्यक्ति को मतदाता बनाया जाये कोई पात्र छूटने न पाये। अगर कहीं लापरवाही की शिकायत मिलती है तो सम्बन्धित बीएलओ के विरुद्ध कार्यवाही की जाएगी। इसी क्रम में आज तहसीलदार सण्डीला राजीव यादव ने ग्राम सभा मीतौ का निरीक्षण किया और बीएलओ एवं सुपरवाइजर जानकारी प्राप्त की ।और शिकायत मिलने पर वोटर लिस्ट में त्रुटि वाले नामों को सही किये जाने के निर्देश दिये।

दो अलग-अलग जगह महिलाओं के शव मिलने से इलाके में हड़कंप

चर्चित राजनीति/संवाददाता

बिजनौर। दो अलग-अलग जगह महिलाओं के शव मिलने से इलाके में हड़कंप मच गया। मौके पर पहुंची पुलिस ने दोनों शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया और कार्रवाई में जुट गई है। एक शव की पहचान हो गई, जबकि दूसरे की पहचान कराने में पुलिस जुटी है। बिजनौर जिले में आज दो अलग-अलग जगह दो महिलाओं के शव मिलने से इलाके में हड़कम्प गया। एक मामला बिजनौर शहर कोतवाली क्षेत्र का है। जहां के नूरपुर रोड पर स्थित एक गन्ने के खेत में एक महिला का शव पड़ा मिला। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर शव की पहचान करने का प्रयास किया तो महिला के शव की पहचान रेनू 26 वर्ष पत्नी विकास निवासी आगरा के रूप में हुई।

29 फरवरी से दोनों पति- पत्नी लापता थे

महिला के परिजनों का कहना है कि महिला अपने पति विकास के साथ 29 फरवरी को चिड़ियापुर गई थी और उसके बाद से दोनों लापता हो गए थे। रेनू के पति विकास का शव रेलवे ट्रैक पर 5 मार्च को पड़ा मिला था और आज रेनू का शव मिला। परिजनों का कहना है कि रेनू की शादी विकास के साथ 9 साल पहले हुई थी इनके दो बच्चे भी।

परिजनों ने जताई हत्या की आशंका

फिलहाल पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया और कार्रवाई में जुट गई है। परिजनों ने आशंका जताई कि विकास ने ही रेनू की हत्या कर दी और राज खुलने के डर से खुद ने भी ट्रेन से कटकर जान दे दी। वहीं दूसरा मामला बिजनौर के नांगल थाना क्षेत्र का है जंहा के सबलपुर खादर इलाके में सुबह 10 बजे एक अज्ञात महिला का शव पड़ा मिला। सूचना पर फॉरेंसिक, व डॉग स्कवायड की टीम के साथ पुलिस की टीम मौके पर पहुंची। घटनास्थल का निरीक्षण कर शव को कब्जे में लेकर पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया।

सम्पादकीय

आत्ममंथन का वक्त

पंजाब-हरियाणा हाईकोर्ट ने हालिया किसान आंदोलन के तौर-तरीकों व सरकारों की कारगुजारियों को लेकर जो तल्ख टिप्पणियां की हैं, वे आंख खोलने वाली हैं। हरियाणा-पंजाब की सीमा पर विगत तीन सप्ताह से मोर्चा संभाले किसान आंदोलनकारियों के तौर-तरीके व उससे निपटने के सरकारों द्वारा उठाये गए कदम मर्यादित व्यवहार पर नये विमर्श की जरूरत बताते हैं। यह सर्वविदित है कि किसानों की दिल्ली कूच की कोशिशों और पुलिस प्रशासन की उन्हें रोकने के प्रयास में लगातार टकराव की खबरें आती रही हैं। जिनमें कई किसानों, पुलिसकर्मियों व अधिकारियों के घायल होने की भी बात कही गई। एक युवक की मौत की अप्रिय घटना भी सामने आई है। जिसको लेकर हाईकोर्ट की सख्त टिप्पणी भी सामने आई। निस्संदेह, यह घटनाक्रम परेशान करने वाला है और इससे आवागमन बाधित होने से आम लोगों को भी भारी परेशानियों का सामना करना पड़ा है। दोहराने की आवश्यकता नहीं है कि लोकतंत्र में हर किसी व्यक्ति को लोकतांत्रिक ढंग से अपनी मांगें उठाने का अधिकार है। सरकारों का भी दायित्व बनता है कि समय रहते किसी भी संगठन या वर्ग की न्यायोचित मांगों पर गंभीरता से विचार करें ताकि आंदोलनकारियों को सड़कों पर उतरने की जरूरत न पड़े। वहीं आंदोलनकारियों की जिम्मेदारी बनती है कि न्यायसंगत मांगों को लेकर आंदोलन तो करें, लेकिन आम लोगों की सुविधा व अधिकारों का ध्यान रखे। निस्संदेह, किसी भी व्यक्ति को लोकतांत्रिक आंदोलन करने व अभिव्यक्ति के अधिकार हैं। लेकिन किसी को निरंकुश व्यवहार की अनुमति नहीं दी जा सकती। साथ ही किसी आंदोलन की वजह से लंबे समय तक राष्ट्रीय राजमार्गों को भी अवरुद्ध नहीं किया जा सकता। कोर्ट की वह टिप्पणी विचारणीय है जिसमें बच्चों को आंदोलन के दौरान ढाल बनाने को पंजाब की संस्कृति के विपरीत बताया गया है। अदालत ने प्रश्न उठाया है कि किसान आंदोलन कर रहे हैं या जंग पर जा रहे हैं? कोर्ट ने खरी-खोटी सुनाते हुए कहा कि क्या हथियार लहराने वाले आंदोलन को शांतिपूर्ण कहा जा सकता है? उल्लेखनीय है कि पंजाब-हरियाणा सीमा पर एमएसपी पर कानूनी गारंटी की मांग को लेकर गत तेरह फरवरी से किसान आंदोलनरत हैं। जिसमें बड़ी संख्या में महिलाओं व बच्चों की भी भागीदारी रही है। गत इक्कीस फरवरी को खनौरी बॉर्डर पर टकराव के दौरान बठिंडा के युवक शुभकरण की मौत हो गई थी। अब अदालत ने मामले में न्यायिक जांच के आदेश दिये हैं। हाईकोर्ट ने आंदोलन के दौरान संदिग्ध परिस्थितियों में मारे गए शुभकरण की मौत के मामले में जांच के लिये एक अवकाश प्राप्त न्यायाधीश समेत तीन सदस्यीय कमेटी को जिम्मेदारी सौंपी है। कमेटी में हरियाणा व पंजाब के एडीजीपी भी शामिल होंगे। हालांकि, अदालत में भी इस मुद्दे को लेकर हरियाणा व पंजाब सरकारों की दलीलें सामने आती रही हैं। एक ओर हरियाणा सरकार की तरफ से कहा जा रहा था कि कि पंजाब सरकार ने शुभकरण की पोस्टमार्टम रिपोर्ट नहीं दी। जिस पर कोर्ट का कहना था कि इस रिपोर्ट को देने में इतने विलंब की तार्किकता क्या है। बहरहाल, अदालत की सख्त टिप्पणियों के बाद किसान आंदोलनकारियों व सरकारों को अपनी रीति-नीतियों पर मंथन करना चाहिए। निस्संदेह, अदालती टिप्पणियां विचारणीय हैं कि जिन किशोरों को स्कूल में होना चाहिए, वे हथियारों के साथ क्यों नजर आ रहे हैं?

ट्रम्प बनाम बाइडेन

अमेरिका में प्राइमरी चुनावों के बाद यह लगभग साफहो गया है कि राष्ट्रपति चुनावों में डोनाल्ड ट्रम्प और जो बाइडेन के बीच जोरदार टक्कर होगी। रिपब्लिकन पार्टी के उम्मीदवार ट्रम्प का चुनाव चिन्ह हाथी होगा और डैमोक्रेटिक पार्टी के उम्मीदवार जो बाइडेन का चुनाव चिन्ह गधा होगा। अब यह बहस दिलचस्प हो गई है कि चुनावों में हाथी दहाड़ेगा या गधा दुलती मारेगा। प्राइमरी इलैक्शन में रिपब्लिकन पार्टी में ट्रम्प को चुनौती दे रही भारतीय मूल की निक्की हेली ने पराजय के बाद अपनी उम्मीदवारी वापिस ले ली है। अमेरिकी नागरिकों का कहना है कि इस बार भी प्रत्याशी वही हैं जो 2020 में आमने-सामने थे। बस साल बदल गया है। 2020 के चुनाव में बाइडेन ने कांटे की टक्कर में ट्रम्प को मात दी थी। तेज हुई राजनीतिक सरगर्मियों के बीच अमेरिका के लोग दोनों की उम्मीदवारी को लेकर बंटे नजर आते हैं। सर्वेक्षणों से पता चलता है कि बहुत से अमेरिकियों को इन दोनों का चुनाव मैदान में आमने-सामने होना पसंद नहीं आ रहा। ट्रम्प के राष्ट्रपति पद का चुनाव लड़ने को लेकर बहुत सी आशंकाएं व्यक्त की जा रही थीं, लेकिन उन्हें काफी हद तक कानूनी राहत मिल चुकी है। ट्रम्प के खिलाफढेर सारे कानूनी मामले हैं जिनमें से चार आपराधिक अभियोग भी शामिल हैं। ट्रम्प की बचाव टीम ने जिस तरह से रणनीति बनाई, उसके चलते अब ट्रम्प को मुकद्दमों में काफी मोहलत मिल गई है। ट्रम्प अपने सनकी स्वभाव के कारण पहले से ही काफी बदनाम हैं। ट्रम्प पर पिछले चुनावों में हार के नतीजों को पलटने की कोशिश, क्लासीफाइड डॉक्यूमैंट अपने पास रखने और यूएस कैपिटल पर हमला करने के लिए अपने समर्थकों को उकसाने के केस चल रहे हैं लेकिन ट्रम्प ने संघीय आपराधिक मामलों से अभियोजन से छूट के पूर्व राष्ट्रपति के अधिकार को लेकर अपील की थी। जब तक ट्रम्प को अभियोजन से प्रतिरक्षा के अधिकार पर फैसला नहीं हो जाता तब तक सुप्रीम कोर्ट ने उनके खिलाफघ्निचली अदालत के फैसलों को स्थगित रखा है। ट्रम्प पर मुकदमा चलाने की लड़ाई ने अमेरिकी सियासत की दरारों को उजागर कर दिया है। मतदाता ट्रम्प की क्षमताओं और उनके द्वारा खड़ा किए जाने वाले सम्भावित जोखिमों के आधार पर बंटे हुए हैं। डैमोक्रेट और रिपब्लिकन राष्ट्रीय स्तर पर अपने इन लोकप्रिय नेताओं के मुकाबले कोई दूसरा विश्वसनीय घ्विकल्प खोजने में नाकाम रहे हैं। अमेरिकी मतदाताओं की नजर में उनके सामने कोई अन्य नेता नहीं है, जिसके झंडे तले पूरा देश एकजुट हो सके। इस बार के चुनाव में अर्थव्यवस्था, विदेशघ्नीघ्ति, जलवायु परिवर्तन और लोकतंत्र प्रमुख मुद्दे हैं। ट्रम्प और बाइडेन दोनों ही अमेरिकी इतिहास में सबसे उम्रदराज राष्ट्रपति होंगे। ट्रम्प अपने तेजतर्रार रवैये के चलते बाइडेन पर भारी साघ्बित होते दिखाई देते हैं। अब इस बात का आकलन शुरू हो गया है कि अगर ट्रम्प दुबारा चुनाव जीते तो पूरी दुनिया पर इसका क्या असर हो सकता है। ट्रम्प अपने पहले कार्यकाल में काफी आक्रामक नजर आए थे। वे लगातार कहते रहे हैं कि अमेरिका को नाटो का हिस्सा नहीं होना चाहिए। इसमें यूरोप के लिए बेकार ही अमेरिकी डॉलर खर्च होते हैं।

चर्चित राजनीति
हिन्दी दैनिक समाचार पत्र
कार्यालय डी-206,सी, विभूतिखण्ड, गोमतीनगर, लखनऊ
क्लासीफाइड्स
अपने साधारण व्यवसायिक वर्गीकरण विज्ञापन को क्लासीफाइड डिस्पले में आकर्षक डिजाइन के साथ प्रकाशित करवाएं
न्यूनतम साइज 4 सेमी X 3 सेमी
अधिकतम साइज 25 सेमी X 3 सेमी
दर- रु. 70रु/- प्रति स्क्वॉयर सेमी
क्लासीफाइडस विज्ञापन पर विशेष ऑफर
स्कीम 2+1, 3+2, 5+5, 10+12, 12+20
300 रू. 25 शब्दों तक, ऑफर 8 रु. प्रति शब्द अतिरिक्त 50 शब्द अधिकतम, वर्गीकरण डिस्पले 70 रु. प्रति स्क्वॉयर सेमी
शर्ते-विज्ञापन सर्वेक्षण नगद भुगतान पर एक साथ बुक कराना अनिवार्य है। विज्ञापन संबंधित कॉलम में ही प्रकाशित होंगे।
क्लासीफाइडस बुकिंग से संबंधित जानकारी हेतु सम्पर्क करें:-
फोन नं0-0522-4075237

नरेंद्र मोदी के परिवार में हैं कौन?

प्रो. रविकांत

पटना के जिस ऐतिहासिक गांधी मैदान में 5 जून 1975 को जयप्रकाश नारायण ने सम्पूर्ण क्रांति का आह्वान करते हुए दिनकर की पंक्तियों को दोहराया था कि श्सिंहासन खाली करो कि जनता आती है, उसी मैदान पर 3 मार्च को राजद और विपक्ष की जनविश्वास रैली संपन्न हुई। अनुमान है कि इस रैली में 10 लाख से ज्यादा लोग शामिल हुए। इस मैदान पर अब तक के इतिहास की संभवतया यह सबसे बड़ी भीड़ थी। लेकिन भीड़ से ज्यादा महत्वपूर्ण था, लोगों का उत्साह और मंच पर मौजूद नेताओं के प्रति उनका विश्वास। लोगों में मौजूदा सत्ता के प्रति रोष इतना था कि जैसे ही नरेंद्र मोदी का नाम आता था लोग हिकारत से हुंकार उठते थे। मंच पर इंडिया गठबंधन के तमाम नेता मौजूद थे। एक तरफ वामपंथी पार्टियों के नेता डी राजा, सीताराम येचुरी और दीपांकर भट्टाचार्य मौजूद थे तो दूसरी तरफकांग्रेस पार्टी के दोनों दिग्गज जननायक राहुल गांधी और पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे थे। यूपी से सपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव भी उपस्थित थे। तीनों नौजवानों राहुल गांधी, अखिलेश और तेजस्वी यादव ने मोदी सरकार को ललकारते हुए उसे उखाड़ फेंकने का संकल्प किया। तेजस्वी यादव पिछले तीन-चार महीने के भीतर बेहद मंझे हुए वक्ता के तौर पर उभरे हैं। 28 जनवरी को जब एक बार फिर नीतीश कुमार ने पलटी मारी और नौंवी बार मुख्यमंत्री पद की शपथ ली, उसके बाद तेजस्वी यादव ने विधानसभा में जो भाषण दिया था उस पर समूचे उत्तर भारत में चर्चा हुई। तेजस्वी यादव एक ऐसे नौजवान नेता के रूप में उभरे हैं जिनमें जोश और जज्बा ही नहीं बल्कि होश और हवास भी है। पटना के गांधी मैदान के मंच पर दहाड़ते हुए उन्होंने नरेंद्र मोदी के औरंगाबाद के भाषण पर जमकर पलटवार किया। नरेंद्र मोदी इंडिया गठबंधन के नेताओं पर परिवारवाद और भ्रष्टाचार का बार-बार आरोप लगाते हैं। औरंगाबाद, बिहार में 2 मार्च को नरेंद्र मोदी ने पूछा था कि तेजस्वी यादव अपने पिता लालू प्रसाद यादव की बात क्यों नहीं करते? तेजस्वी यादव ने ताल ठोकते हुए नरेंद्र मोदी को जवाब दिया। उन्होंने कहा कि श्लालू प्रसाद यादव वह हैं जिन्होंने बिहार में सामाजिक न्याय किया। जिन्होंने गरीबों-वंचितों के भीतर चेतना और स्वाभिमान पैदा किया। जो लोग गलियों से अपना चप्पल पहनकर नहीं निकल सकते थे, उन्हें सिर उठाकर चलने की ताकत लालू यादव ने दी। जिन्हें कुएं से पानी नहीं भरने दिया जाता था, उन्हें कुआं खोदने लायक बनाया और इस लायक भी बनाया कि उनको भी पानी पिला सकें, जो उन्हें पानी नहीं पीने देते थे। लालू प्रसाद यादव ने अपने पुराने ठेठ बिहारी अंदाज में नरेंद्र मोदी को जमकर लताड़ा। परिवारवाद पर नरेंद्र मोदी के बार-बार हमले पर पलटवार करते हुए उन्होंने कहा कि अगर वह अपना परिवार नहीं बना सके तो मैं क्या करूं? जाहिर तौर पर लालू यादव का इशारा नरेंद्र मोदी और उनकी पत्नी की तरफथा। लंबे समय तक नरेंद्र मोदी इस बात को छुपाए रहे कि उनकी शादी भी हुई है। लोकसभा चुनाव (2014) के समय उन्होंने दाखिल हलफनामे में पहली बार विवाहित होने और पत्नी के रूप में जसोदा बेन के नाम का जिक्र किया था। ट्रिपल तलाक के मुद्दे पर कथित रूप से मुस्लिम बहनों को न्याय दिलाने वाले नरेंद्र मोदी से लोग पूछते हैं कि उन्होंने बिना तलाक दिए जसोदा बेन को क्यों छोड़ दिया? लालू प्रसाद यादव ने तो नरेंद्र मोदी के हिंदुत्व पर भी प्रहार किया। उन्होंने कहा कि नरेंद्र मोदी तो हिंदू भी नहीं है क्योंकि अपने माता-पिता के मृत्यु के बाद हिन्दू अपने सिर का मुंडन करवाता है। लेकिन मां की मौत के बाद नरेंद्र मोदी ने अपने बाल नहीं कटवाए। लालू यादव के नरेंद्र मोदी ने तो परिवार ही नहीं बनाया वाले बयान को काउंटर करने के लिए भारतीय जनता पार्टी ने एक नई कैंपेन लांच की। भारतीय जनता पार्टी के तमाम नेताओं, पदाधिकारियों, मंत्रियों और समर्थकों ने अपने नाम के साथ ट्विटर पर बायो में श्मोदी का परिवारश् लिखकर ट्वीट किए। 4 मार्च को नरेंद्र मोदी तेलंगाना में थे। वहां पर भाषण देते हुए नरेंद्र मोदी ने पार्टी की इसी कैंपेन को ही आगे रखा। उन्होंने कहा कि इस देश के सारे लोग उनका परिवार हैं। दरअसल, भारतीय जनता पार्टी इस कैंपेन को 2019 के लोकसभा चुनाव के समय मैं भी चौकीदार जैसे कैंपेन की तरह आगे बढ़ना चाहती है। राफेल सौदे में घोटाले का जिक्र करते हुए राहुल गांधी ने नरेंद्र मोदी को घेरते हुए कहा था कि चौकीदार ही चोर है। इसको काउंटर करने के लिए भारतीय जनता पार्टी और उसके अनुषांगिक संगठनों और आईटी सेल ने श्मैं भी चौकीदारश् जैसा कैंपेन चलाया था। पुलवामा आतंकवादी हमला और फिर बालाकोट एयर स्ट्राइक के राष्ट्रवादी शोर में राहुल गांधी के आरोप पर श्मैं भी चौकीदारश् कैम्पेन सफल हो गया। बेमन से लोकसभा चुनाव में उतरे विपक्ष ने जैसे पहले ही हार मान ली थी। नतीजे में 2014 की 282 सीटों के मुकाबले 2019 में नरेंद्र मोदी को 303 सीटें मिलीं। 2024 के लोकसभा चुनाव के लिए नरेंद्र मोदी ने अबकी बार 370 पार का नारा दिया है। लेकिन इस बार जमीनी हकीकत कुछ और है। इसीलिए लालू प्रसाद यादव की बात को पकड़कर एक नई कैंपेन लॉन्च की जा रही है। जो नरेंद्र मोदी पहले अपने भाषणों में श्मित्रोंश् संबोधन का इस्तेमाल करते थे, वे आजकल श्मेरे परिवार वालोंश् तक पहुंच गए हैं। दरअसल, राहुल गांधी ने नरेंद्र मोदी और उनके मित्रों अडानी-अम्बानी के बीच गठजोड़ को इतना एक्सपोज कर दिया है कि मोदी मित्रों शब्द बोलना ही भूल गए हैं। या यूं कहें कि बड़ी चतुराई से इस शब्द को छोड़कर नरेंद्र मोदी मेरे परिवार शब्द से लोगों को संबोधित करने लगे हैं। अब इसका एक्सटेंशन करते हुए मोदी कह रहे हैं कि श्यह देश मेरा परिवार है और हम इस देश के हैं।श् इस तरह के शब्दजाल से नरेंद्र मोदी पूरी कैंपेन को अपने पक्ष में करना चाहते हैं। लेकिन सवाल यह है कि 10 साल की एन्टी इनकंबेंसी और लगभग हर मोर्चे पर असफल नरेंद्र मोदी क्या इस कैंपेन के सहारे चुनाव जीत पाएंगे? और असली सवाल तो यह है कि नरेंद्र मोदी जिसे अपना परिवार कह रहे हैंय उस परिवार में क्या वे किसान नहीं आते, जो दिल्ली की सरहदों पर इस बिगड़ते-बदलते मौसम में बैठे हुए हैं। वे दिल्ली पहुंचने का इंतजार कर रहे हैं। वे नरेंद्र मोदी सरकार को 2021 में किए गए वादे याद दिलाना चाहते हैं। तीन काले कानून वापस लेते हुए नरेंद्र मोदी ने किसानों से उनकी फसलों पर एमएसपी की गारन्टी का कानून बनाने का वादा किया था। ये वादा भी नरेंद्र मोदी ने आसानी से नहीं किया था। लगातार 13 महीने तक यूपी, पंजाब, हरियाणा, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश आदि राज्यों के किसान तीन काले कानूनों के खिलाफऔर एमएसपी की मांग के लिए जूझते रहे। 750 से अधिक किसानों की शहादत के बाद नरेंद्र मोदी की नींद खुली। ये भी तब हुआ जब उत्तर प्रदेश का चुनाव नजदीक आ गया। जाट किसानों की नाराजगी झेलने की हिम्मत नरेंद्र मोदी में नहीं थी। इसीलिए उन्होंने किसानों से छलपूर्वक समझौता किया। जो नरेंद्र मोदी धृतराष्ट्र की तरह अपना सिंहासन पकड़े हुए बैठे थे, वही नरेंद्र मोदी श्मेरी तपस्या में ही कोई कमी रह गई होगीश् कहते हुए तीन काले कानून वापस लेते हैं। देश का किसान जो धरती का सीना चीरकर और अपना खून पसीना बहाकर फसल को पैदा करता है, वह अन्नदाता ही नहीं सर्जक भी है। पहले वह बीज बोता है, सृजन करता है, तब फसल काटता है। सर्जक कभी अन्यायी नहीं हो सकता। वह विद्रोही तो हो सकता है लेकिन विश्वासघाती नहीं। वह बेआवाज तो हो सकता है लेकिन बेईमान नहीं हो सकता। इसीलिए किसान नरेंद्र मोदी सरकार के आश्वासन और वादे लेकर लौट गए। लेकिन अपनी फितरत के अनुसार नरेंद्र मोदी ने एमएसपी की गारंटी को पूरा नहीं किया। सरकार को चेतावनी देते हुए पंजाब और हरियाणा के किसानों को फिर से दिल्ली की ओर कूच करना पड़ा। नरेंद्र मोदी की सरकार ने जिस क्रूर तरीके से उनका स्वागत किया, वह इतिहास में काले अक्षरों में दर्ज होगा। बड़ी-बड़ी कीलें सड़कों पर गाड़ी गईं। क्रांकीट की दीवारें खड़ी की गईं। पुलिस की लाठियां और बंदूकें उनका इस्तकबाल कर रही थीं। आंसू गैस के गोले बरसाए गए। पुलिस की गोली से दो किसानों की मौत हो चुकी है। लेकिन नरेंद्र मोदी के देश और परिवार में ये किसान नहीं आते। क्या देश कागज पर उकेरा गया नक्शा है? क्या नरेंद्र मोदी के देश में मणिपुर आता है? वहां पिछले 8-10 महीने से लगातार जातीय हिंसा हो रही है। मणिपुर में महिलाओं और बच्चों पर जघन्य अत्याचार हुए। पागल भीड़ ने महिलाओं का सामूहिक बलात्कार करके उनकी हत्या कर दी। वहां पर हिंसा, आगजनी और हत्याओं का सिलसिला जारी है। लेकिन मणिपुर उनके परिवार में नहीं आता। इसीलिए वे आजतक मणिपुर नहीं गए। उस परिवार में उजड़ गए गांव, घर, खेत की चिंता कभी नरेंद्र मोदी ने नहीं की लेकिन यह ढोंग चुनावी राजनीति के लिए किया जा रहा है कि मेरा देश ही मेरा परिवार है! फिल्मी डायलॉग की तरह नरेंद्र मोदी इस ढोंग को बार-बार दोहराते रहेंगे, लेकिन उन्हें महिला पहलवानों की आंखों के आंसू कभी नहीं याद आएंगे जो उनके ही सांसद के उत्पीड़न के कारण उपजे थे। मोदी के परिवार में महिला खिलाड़ी नहीं आते। हाथरस और कानपुर की दलित बेटियां भी नहीं आती। इस परिवार में वे आदिवासी भी नहीं आते जिनके मुंह पर उनके ही पार्टी के नेता पेशाब करते हैं। वे आदिवासी भी मोदी के परिवार में नहीं आते जिनके जंगलों और जमीनों पर उनके मित्र अडानी की नजरें लगी हुई हैं। नरेंद्र मोदी के परिवार में वे नौजवान भी नहीं आते जो सड़कों पर रोजगार की भीख मांगते हैं लेकिन उनको मिलती हैं पुलिस की लाठियां। नरेंद्र मोदी के परिवार में वे नौकरी करने वाले भी नहीं आते जिनके पास पेंशन नहीं है। जिनका वेतन आयोग खत्म कर गया वे सरकारी नौकर भी नहीं आते। उनके परिवार में तो वे व्यवसायी भी नहीं आते जिनपर जबरन जीएसटी ठोक दिया गया। कोरोना काल में जानवरों की तरह हंकाल दिए गए बेबस गरीब मजदूर भी उनके परिवार में नहीं आते, जो भूखे प्यासे रात-दिन पैदल बीबी बच्चों के साथ चलते रहे। रास्ते में सरकारी राहत के नाम पर उन्हें सिर्फ पुलिस की लाठियां मिलीं। वो मध्य वर्ग भी नरेंद्र मोदी के परिवार में नहीं आता जिसके लाखों अपने सगे कोरोना काल में सरकारी बदइंतजामी और दवा व्यापारियों के भ्रष्टाचार के कारण मर गए। चारों तरफहाहाकार था लेकिन मोदी जी नदारद थे। तो आखिर नरेंद्र मोदी के परिवार में हैं कौन? वे चंद अमीर लोग जो मोदी को चंदा देते हैं और मोदी बदले में उन्हें धंधा देते हैं! यही उनका देश है। यही उनका परिवार है और यही उनका संसार भी है।

चुनावी बांड विवरण पर समय सीमा बढ़ाने की एसबीआई की याचिका अनुचित

पी.सुधीर

भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने चुनावी बांड योजना को असंवैधानिक और स्पष्ट रूप से मनमाना बताते हुए रद्द कर दिया था। यह आश्चर्य की बात नहीं है कि मोदी सरकार को यह फैसला अरुचिकर लगा, इस तथ्य की पृष्ठभूमि में कि चुनावी बांड योजना राजनीतिक भ्रष्टाचार को वैध बनाने के लिए बनाई गई थी सरकार ने फैसले के कार्यान्वयन को कमजोर करने के लिए भारतीय स्टेट बैंक (एसबीआई) के माध्यम से कदम उठाया है। सुप्रीम कोर्ट ने निर्देश दिया था कि अप्रैल 2019 से खरीदे गये चुनावी बांड के सभी विवरण सार्वजनिक किये जाने चाहिए, जिसमें खरीद की तारीख, खरीदार का नाम और बांड का मूल्य शामिल है। इसके लिए, भारतीय स्टेट बैंक, जो चुनावी बांड के लेनदेन के लिए एकमात्र एजेंसी थी, को 6 मार्च तक बांड के सभी प्रासंगिक विवरण भारत के चुनाव आयोग को प्रस्तुत करने के लिए कहा गया था और उसके बाद चुनाव आयोग को 13 मार्च तक इस सम्बंध में सारी जानकारी सार्वजनिक करनी थी। एसबीआई ने 4 मार्च को सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा खटखटाया है और चुनावी बांड लेनदेन का विवरण प्रस्तुत करने के लिए अधिक समय मांगा है। इसमें 30 जून तक का समय बढ़ाने के लिए कहा गया है। इसका मतलब यह होगा कि सुप्रीम कोर्ट द्वारा एसबीआई को दिये गये 21 दिनों के बजाय, बैंक अब काम पूरा करने के लिए 116 दिन और चाहता है। दरअसल, इसका अर्थ होगा लोकसभा चुनाव खत्म होने और नयी सरकार बनने के बाद ही जनता को चुनावी बांड के विवरण के बारे में सूचित किया जायेगा। एसबीआई के अनुरोध को व्यापक आलोचना और उपहास का सामना करना पड़ा है। एसबीआई के सभी बैंकिंग परिचालन डिजिटल हो गये हैं। एसबीआई द्वारा दिये गये एक आरटीआई जवाब के अनुसार, चुनावी बांड जारी करने के लिए आईटी प्रणाली के विकास पर कुल 1,50,15,338 रुपये की लागत में से 60,43,005 रुपये खर्च किये गये। यदि चुनावी बांड योजना के लिए एक आईटी प्रणाली विकसित करने के लिए 60 लाख रुपये से अधिक खर्च किये गये थे, तो यह कैसे हो सकता है कि एसबीआई अब यह दावा करता है कि चुनावी बांड के कुछ रिकॉर्ड एसबीआई के मुंबई मुख्यालय में मैन्युअल रूप से और सीलबंद कवर में रखे गये हैं? जब किसी व्यक्ति या इकाई द्वारा एसबीआई की निर्दिष्ट शाखा में बांड खरीदा जाता है, तो उसे डिजिटल रूप से रिकॉर्ड किया जायेगा। जब धारक बांड किसी अन्य निर्दिष्ट एसबीआई शाखा में जमा किया जायेगा, तो उसका भी एक डिजिटल रिकॉर्ड होगा। 2019 की शुरुआत में, हफपोस्ट इंडिया में नितिन सेठी ने लिखा था कि कैसे एसबीआई द्वारा जारी किये गये बांड में एक गुप्त अल्फान्यूमेरिक कोड होता है, जिसका उपयोग यह ट्रैक करने के लिए किया जा सकता है कि बांड किसने खरीदा और किस पार्टी को इसे दान किया गया है। भले ही कुछ रिकॉर्ड मैन्युअल रूप से रखे गये हों, फिर भी यह मानने का कोई कारण नहीं है कि 22,217 चुनावी बांड का हिसाब-किताब 21 दिनों के अंतराल में नहीं किया जा सकता है। एसबीआई को बस इतना करना था कि इस काम के लिए अतिरिक्त कर्मियों को नियुक्त करता। इसलिए, यह बिल्कुल स्पष्ट है कि एसबीआई एक घटिया बहाना और गलत कारण लेकर सामने आया है, जो सुप्रीम कोर्ट की बुद्धिमत्ता का अपमान करने जैसा है। गलत मंशा इस बात से भी स्पष्ट होती है कि एसबीआई ने 6 मार्च से ठीक एक दिन पहले अदालत में अपनी याचिका दायर की, ताकि समय सीमा चूकना एक नियति बन जाये। मोदी सरकार और सत्तारूढ़ भाजपा के पास अब तक जारी किये गये और भुनाये गये चुनावी बांड के विवरण के प्रकाशन को रोकने की कोशिश करने का हर कारण है। जैसा कि अदालत ने स्वयं बताया था, यह योजना इस प्रकार तैयार की गयी थी कि प्रतिदान की सुविधा प्रदान की जा सके। एक बार जब भाजपा को प्राप्त 6,565 करोड़ रुपये के बांड का ब्यौरा पता चल जाये, तो इसका संबंध इस बात से लगाया जा सकता है कि किस कंपनी या व्यक्तिगत पूंजीपति ने उसे कितना बांड राशि दान किया था और बदले में कौन सी नीति या लाभ उसे दिया गया था। एक और पहलू है जो भाजपा को मिले चुनावी बांड का ब्यौरा प्रकाशित होने से उजागर होगा। न्यूज लॉन्ड्री और द न्यूज मिनट द्वारा हाल ही में भाजपा को प्राप्त कॉर्पोरेट दान (चुनावी बांड के माध्यम से नहीं) के एक अध्ययन से पता चलता है कि कम से कम 30 कंपनियां हैं, जिन्होंने पिछले पांच वित्तीय वर्षों में भाजपा को लगभग 335 करोड़ रुपये का दान दिया था। वर्षों तक इसी अवधि के दौरान उन्हें केंद्रीय एजेंसियों द्वारा कार्रवाई का सामना करना पड़ा था। इनमें से 23 कंपनियों ने 2014 और ईडी या आईटी विभाग जैसी केंद्रीय एजेंसी द्वारा की गई कार्रवाई के वर्ष के बीच कभी भी भाजपा को दान नहीं दिया थाय केंद्रीय एजेंसी की कर्रवाई के चार महीनों के भीतर चार कंपनियों ने कुल 9.05 करोड़ रुपये का दान दियाय छह कंपनियां जो पहले से ही भाजपा को दान दे रही थीं, उन्होंने तलाशी के बाद के महीनों में बड़ी रकम सौंपी। यह इस बात का जबरदस्त सुबूत है कि कैसे केंद्रीय एजेंसियों का इस्तेमाल भाजपा के लिए धन उगाही करने के लिए किया जाता है। एक बार जब भाजपा के संबंध में चुनावी बांड विवरण प्रकाशित हो जाते हैं, तो न केवल रिश्वतखोरी और भ्रष्टाचार के बीच संबंध स्थापित किया जा सकता है, बल्कि यह भी स्थापित किया जा सकता है कि केंद्रीय एजेंसियों की जबरदस्त कार्रवाइयों द्वारा ब्लैकमेल के माध्यम से धन कैसे निकाला गया था। सुप्रीम कोर्ट 6 मार्च तक एसबीआई की याचिका पर विचार नहीं कर सका। कोर्ट को छल-कपट को पारित नहीं होने देना चाहिए। सर्वोच्च न्यायालय को एसबीआई के अनुरोध पर शीघ्र सुनवाई कर समुचित निर्णय का उसके अनुपालन के लिए तत्काल अल्प समय सीमा निर्धारित करनी चाहिए, ताकि चुनावों के सम्पन्न हो जाने तक जनता को अंधेरे में न रखा जा सके।

लोकतंत्र के शुभ को आहत करने वाले अपराधी नेता

आपराधिक छवि वाले या जघन्य अपराधों में लिप्त लोगों को राजनीति दलों का संरक्षण मिलना भारतीय लोकतंत्र की बड़ी विडम्बना है। तृणमूल कांग्रेस के नेता शाहजहां शेख को संदेशखाली हिंसा, जमीन घोटाले, स्कूल घोटाले, देह व्यापार के धंधे व यौन उत्पीड़न के आरोप में आखिर सीबीआइ के सुपुर्द कर दिया गया। लोकतंत्र की दुहाई देने वाली पश्चिम बंगाल की ममता बनर्जी सरकार लगातार अदालती आदेशों की धज्जियां उडाती रही, ममता ने शाहजहां शेख को सीबीआई को सुपुर्द करने के मामले में जो गैरजिम्मेदाराना एवं अलोकतांत्रिक रवैया अपनाया वह आश्चर्यजनक और चिंताजनक है। यह कैसी विवशता है राजनीतिक दलों की? अक्सर राजनीति को अपराध मुक्त करने के दावे की हकीकत ऐसे ही अवसरों पर सामने आती है। कलकत्ता उच्च न्यायालय के दुबारा आदेश के बावजूद संदेशखाली मामले के आरोपी को सीबीआइ के सुपुर्द करने में देरी होना न केवल समझ से परे है बल्कि यह लोकतंत्र एवं न्याय व्यवस्था की अवमानना है। इस पूरे प्रकरण से राजनीति समझ में आती है जो एक आरोपी को लेकर हो रही है। लोकसभा चुनाव आने वाले हैं और राज्य में भारतीय जनता पार्टी और तृणमूल कांग्रेस शेख के मामले को एक राजनैतिक मुद्दा बनाने पर तुले हुए हैं। आज भारत की आजादी का अमृत महोत्सव की परिसम्पन्नता पर एक बड़ा प्रश्न है भारत की राजनीति को अपराध मुक्त बनाने का। यह बेवजह नहीं है कि देशभर में अपराधी तत्त्वों के राजनीति में बढ़ते दखल ने एक ऐसी समस्या खड़ी कर दी है कि शेख पर गंभीर आरोपों के बावजूद ममता सरकार उसे बचाने में लगी रही। शेख अपने इलाके संदेशखाली में महिलाओं का उत्पीड़न करता था और देह व्यापार के धंधे में भी संलग्न था। ये आरोप गंभीर हैं जिनकी गहनता से जांच होनी चाहिए। मगर हो यह रहा है कि राज्य सरकार शेख की रक्षा में नजर आ रही है और भाजपा लगातार आक्रमण कर रही है। विडम्बना यह है कि शाहजहां शेख कोई समाजसेवी न होकर वर्तमान दौर का मुनाफेबाज नेता, व्यभिचारी, हिंसा एवं अराजकता फैलाने का आरोपी है। वैसे तो ममता दीदी की सरकार में कई घोटाले हुए हैं मगर स्कूल घोटाले में शाहजहां शेख का नाम आने पर प्रवर्तन निदेशालय ने उसके खिलाफ जब जांच शुरू की तो हंगामा बरपा हो गया। प्रवर्तन निदेशालय की टीम विगत जनवरी माह के पहले सप्ताह में जब शाहजहां शेख के यहां संदेशखाली पहुंची तो स्थानीय तृणमूल कार्यकर्ताओं ने उस टीम पर हमला बोल दिया। इनमें अधिसंख्य शेख के समर्थक ही थे। तृणमूल कांग्रेस एवं उनके नेताओं पर लगे गंभीर आरोपों के बाद एक बार फिर इस सवाल ने जोर पकड़ा है कि जो लोग राजनीति को अपराधीकरण से मुक्त बनाने की बात करते हैं, वे हर बार मौका मिलने पर अपने संकल्प एवं बेदाग राजनीति के दावों से पीछे क्यों हट जाते हैं? तृणमूल कांग्रेस में शेख जैसे नेताओं की कमी नहीं हैं। संदेशखाली से महिलाओं के यौन उत्पीड़न और जमीनों के कब्जे को लेकर आ रही खबरें डराने वाली हैं। इन खबरों में कितनी सच्चाई है, इसका फैसला तो अदालत ही करेगी। तो फिर आरोपी को बचाने के लिए पश्चिम बंगाल सरकार एड़ी-चोटी का जोर क्यों लगाती रही? यहां सवाल तृणमूल कांग्रेस और भारतीय जनता पार्टी का अथवा किसी अन्य दल का नहीं है। सवाल है, महिलाओं की अस्मिता से खेलने के आरोपियों को सजा दिलाने का। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री स्वयं महिला हैं और उन्होंने एक महिला के अस्तित्व एवं अस्मिता को नौंचने वाले नेता को क्यों राजनीतिक संरक्षण दिया? आज राजनीति की दशा बदतर है कि यहां जनता के दिलों पर राज करने के लिये नेता अपराध, भ्रष्टाचार एवं चरित्रहीनता का सहारा लेते हैं। जातिवाद, प्रांतवाद, साम्प्रदायिकता को आधार बनाकर जनता को तोड़ने की कोशिशें होती है। पर हम कितना भ्रम पालते हैं। पहचान चरित्र के बिना नहीं बनती। बाकी सब अस्थायी है। चरित्र एक साधना है, तपस्या है। जिस प्रकार अहं का पेट बड़ा होता है, उसे रोज कुछ न कुछ चाहिए। उसी प्रकार राजनीतिक चरित्र को रोज संरक्षण चाहिए और यह सब दृढ़ मनोबल, साफछवि, ईमानदारी

श्री राज हंस जूनियर हाई स्कूल में मनाया गया वार्षिकोत्सव

मुख्य अतिथि रहे जिला अध्यक्ष प्रतिनिधि शिवकुमार सिंह

चर्चित राजनीति/संवाददाता

सुल्तानपुर। धम्मौर,त्रिलोकपुर वार्षिकोत्सव एवं अभिवावक शिक्षक संगोष्ठी व देशभक्ति का कार्यक्रम का उद्घाटन जिला पंचायत अध्यक्ष प्रतिनिधि व ब्लॉक प्रमुख शिवकुमार सिंह ने कार्यक्रम का प्रारंभ माता सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण और दीप प्रज्ज्वलित से प्रारंभ हुआ। कार्यक्रम में बच्चों द्वारा रंगारंग व देशभक्ति का कार्यक्रम किया गया। जिसमें सरस्वती वन्दना, स्वागत गीत, विदाई गीत नृत्य आदि कार्यक्रम बच्चों द्वारा प्रस्तुत किये गये। जिसमें उपस्थित अतिथि गण एवम अभिभावक गण ने कार्यक्रम की खूब सराहना की। कार्यक्रम में प्रधानाध्यापक दीपचंद्र यादव, प्रबन्धक अमर सिंह यादव डारेक्टर ज्ञान सिंह यादव जिला पंचायत सदस्य प्रतिनिधि समाजसेवी हंसराज यादव, जिला पंचायत सदस्य रामशंकर यादव डॉक्टर सादिक अली, विधायक विनोद सिंह की सुपुत्री समाजसेविका पलक सिंह, मंजू तिवारी ,सुमन कोरी ,रीना जायसवाल ,युवा भाजपा नेता महेश यादव,प्रधान प्रतिनिधि राम अचल यादव, प्रधान राजेन्द्र यादव, दीपक, अर्जन,सचिन रमाकांत यादव मास्टर रामतीर्थ, मास्टर पंकज, डाक्टर राममूरत प्रजापति विक्की यादव, पवन, क्षेत्र के विभिन्न सम्मानित अभिभावक गण आदि लोग मौजूद रहे ।

नूर शहीद क्रिकेट क्लब प्रतियोगिता का हुआ समापन

चर्चित राजनीति/संवाददाता

सुल्तानपुर। बल्दीराय क्षेत्र के नंदौली गांव के मैदान में चल रही बाबा नूर शहीद क्रिकेट क्लब प्रतियोगिता का रविवार को समापन हो गया। फाइनल मुकाबले में हामिद एलेवन की टीम ने चकौंदी टीम को 97 रनों से शिकस्त दी। 15 दिवसीय क्रिकेट प्रतियोगिता के फाइनल में चकौंदी की टीम ने टॉस जीतकर पहले फील्डिंग करने का निर्णय लिया। हामिद एलेवन के बल्लेबाजों ने 12 ओवर में 6 विकेट पर 197 रनों का स्कोर खड़ा किया। इसके जवाब में उतरी चकौंदी टीम 100 रन बनाकर ऑलआउट हो गई। इस तरह हामिद एलेवन ने 97 रनों से मैच जीत लिया। मुख्य अतिथि ब्लाक प्रमुख धनपतगंज यशभद्र सिंह मोनू व विशिष्ट अतिथि डॉक्टर शोएब मुस्तफा,इंजीनियर निहाल अहमद ने हामिद एलेवन टीम के कप्तान मोहम्मद हामिद को 25 हजार व उप विजेता टीम चकौंदी अन्ना के कप्तान को 15 हजार रुपये देकर सम्मानित किया। टूर्नामेंट में प्लेयर ऑफ द मैच अफजल अहमद और प्लेयर ऑफ द सीरीज नूर आलम रहे। अंपायर की भूमिका मोहम्मद शफीक व लाल मोहम्मद ने निभाई। आयोजक बब्बू ने बताया कि क्रिकेट प्रतियोगिता में करीब 25 टीमों ने प्रतिभाग किया था। इस मौके पर शिवम श्रीवास्तव, डॉक्टर सादाब मुस्तफा,डॉ नोमान,मोहम्मद सलीम,कोटेदार अकरम खान, जमील अहमद,एजाज अहमद, असगर,फैसल,गुलाब,नूर आलम,शानू,शकील,कादिर, सुफियान,डॉ अफसर, डॉ अकबर, तब्बू,तनवीर आलम,बीडीसी मोनू, हाफिज अनवार,फैयाज,इंद्रजीत, डॉ शकील,लल्लू,दानिश, बबलू, ठेकेदार रईस, बब्बू, पप्पू, इदरीश, एहरार,अकील,मास्टर समीम, चांद, मुन्ना, इकलाख अहमद, हासिम,कैस, जियाउर्रहमान, हसनैन,जुनैद, असलम खान, फजल खान आदि मौजूद रहे।

भट्ठा मजदूर ने फांसी लगाकर किया आत्महत्या

चर्चित राजनीति/संवाददाता

खीरों, रायबरेली। अज्ञात कारणों के चलते मजदूर ने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। खीरों थाना क्षेत्र। के नुनैरा गांव निवासी कृपा शंकर पासी (38) पुत्र गंगाराम पासी लखनऊ में भट्ठे में मजदूरी का काम करता था अज्ञात। कारणों के चलते लखनऊ में भट्ठे। में फाँसी लगाकर आत्महत्या कर लिया मृतक के तीन लड़के है। सूचना पर।लखनऊ पुलिस टीम के साथ मौके पर पहुंचे। और शव को फंदे से नीचे उतारा जिसके बाद शव।की शिनाख्त कृपा शंकर पुत्र।गंगाराम के रूप में हुई। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया वही परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल है।

सूबेदार मेजर राम बहादुर सैनिक समाज सेवा संगठन के जिलाअध्यक्ष मनोनीत

चर्चित राजनीति/संवाददाता

रायबरेली। सैनिक समाज सेवा संगठन गोष्ठी का आयोजन संपन्न मीटिंग महिला प्रकोष्ठ से उपस्थित रायबरेली जिला सचिव सुभाष्टनी देवी अन्य महिला सदस्य एवं संगठन में उपस्थित सभी पदाधिकारी एवं सदस्यों ने बढ़ चढ़कर भाग लिया और गोष्ठी में अपने-अपने सुझाव रखे हैं संगठन को कैसे और मजबूती प्रदान की जाए अलग-अलग क्षेत्र से आए पदाधिकारी अपने-अपने क्षेत्र की समस्याएं एम सेवानिवृत सैनिकों की समस्याओं से रूबरू कराया सैनिक समाज सेवा संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष ने कहा कि संगठन का मूल मंत्र ही सेवा है संगठन के माध्यम से हम उन परिवार पहुंचने की कोशिश करूंगा जिन्हें सरकारी योजनाओं का लाभ नहीं मिल पा रहा है घर घर सरकारी योजनाओं के बारे में बताया जायेगाध् जानकारी दी जाएगी जिससे उन योजना का लाभ उठा सके । उत्तर प्रदेश एवं पूरे भारत में लगातार संगठन के विस्तार हेतु का कार्य चल रहा है और बहुत कम समय में संगठन ने अपनी एक अलग पहचान बना ली । संगठन के विस्तार के कार्य में सैनिक समाज सेवा संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष एडवोकेट जय सिंह यादव फौजी जी ने सूबेदार मेजर राम बहादुर सेवानिवृत निवासी रायबरेली को जिला अध्यक्ष रायबरेली पद की जिम्मेदारी से नवाजा गया । हमे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है की आप संविधान और संगठन के विधि विधान के साथ निष्ठां और ईमानदारी के साथ समाजहित में काम करेंगे। सूबेदार मेजर राम बहादुर सेवानिवृत निवासी रायबरेली को जिला अध्यक्ष रायबरेली बनने पर छेत्र में खुशी कि लहर जग उठी और संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष एडवोकेट जय सिंह यादव (फौजी), राष्ट्रीय उपाध्यक्ष राजमोहन, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष पवन कुमार, राष्ट्रीय महासचिव राजेश कुमार, प्रदेश अध्यक्ष (उ.प्र.) एस बी यादव जिला महासचिव, सेवानिवृत्ति कैप्टन दल बहादुर यादव , जिला सचिव रायबरेली फौजी देश कुमार यादव ब्लॉक अध्यक्षडलमऊ अनिल कुमार, ब्लॉक अध्यक्ष सरेनी श्रीराम यादव, विधानसभा अध्यक्ष ऊंचाहार श्रीराम मौर्य महिला जिला सचिव सुभाषिनी देवी, अंकिता देवी, किरण विश्वकर्मा, सूबेदार राज बहादुर यादव फौजी प्रदीप कुमार, फौजी मानसिंह व आदि संगठन के पदाधिकारियों ने बधाई दी व उज्ज्वल भविष्य की कामना की । सूबेदार मेजर राम बहादुर सेवानिवृत निवासी रायबरेली को जिला अध्यक्ष रायबरेली पद की जिम्मेदारी मिलने पर संगठन के सदस्यों ने बधाई दी बधाई देने वालो में कैप्टन राम सिंह यादव , धनंजय यादव, रामनंद, संतोष यादव,राजेश सिंह अवधेश सिंह अवधेश पाल एवं संगठन के आदि सदस्यों ने बधाई दी।

शिक्षक खुद को जलाकर फैलाता है ज्ञान की रोशनी : बृजलाल

जहां पर पढ़े वहीं पर हो रहा है आज हमारा सम्मान: शफीकुर्रहमान

समाज में शिक्षा की अलख जगाना ही शिक्षक का काम : राघवेंद्र यादव

चर्चित राजनीति/संवाददाता

रायबरेली। अमावां ब्लॉक के पूर्व माध्यमिक विद्यालय थुलवासा में 31 मार्च को सेवानिवृत्त होने जा रहे शिक्षकों का सम्मान समारोह आयोजित किया गया। शिक्षक सम्मान समारोह और शिक्षा उन्नयन गोष्ठी के मुख्य अतिथि खण्ड शिक्षा अधिकारी संघ के प्रदेश महामंत्री वीरेंद्र कनौजिया, विशिष्ट अतिथि राही के खण्ड शिक्षा अधिकारी बृजलाल रहे। शिक्षक सम्मान समारोह के दौरान सेवानिवृत्त होने जा रहे पूर्व माध्यमिक विद्यालय हिलगी के प्रधानाध्यापक शफीकुर्रहमान उर्फगुड्डू व प्राथमिक विद्यालय पूरे जमादार के इंचार्ज प्रधानाध्यापक सैय्यद मो. शहाब हाशमी को अंगवस्त्र, भारत का संविधान देते हुए फूल माला पहनाकर अतिथियों और शिक्षकों ने सम्मान किया गया। बीईओ वीरेंद्र कनौजिया और बृजलाल ने कहा कि शिक्षक वह मोमबत्ती होते हैं, जो खुद जलकर दूसरों को प्रकाश देने का कार्य करते हैं। शिक्षा और शिक्षक एक दुसरे के पूरक होते है। उन्होंने कहा कि वे शिक्षा की रोशनी के पूरे समाज को रोशन करते रहते हैं। काम से ही व्यक्ति की पहचान होती है। जूनियर हाईस्कूल शिक्षक संघ के जिलाध्यक्ष राघवेंद्र यादव ने कहा कि जिस दिन से सेवा में आ जाते हैं, उस दिन से सेवानिवृत्त की तिथि तय हो जाती है लेकिन हमारे साथियों का काम समाज शिक्षा की अलख जगाना है जो कि सदैव जारी रहता है। राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ के जिलाध्यक्ष वीरेंद्र सिंह ने कहा कि पौराणिक काल से ही गुरु ज्ञान के प्रसार के साथ साथ समाज के विकास का बीड़ा उठा रहे हैं। गुरू अज्ञान रुपी अंधकार से ज्ञान रूपी प्रकाश की ओर ले जाने वाला सशक्त माध्यम होता है। उन्होंने कहा कि सांस्कृतिक संस्कार के ज्ञानदीप शिक्षक होते हैं। डीपीए के प्रदेश महामंत्री अशोक प्रियदर्शी व प्राथमिक शिक्षक संघ के जिलाध्यक्ष राजेश शुक्ला ने कहा कि शिक्षक राष्ट्र के प्राण तत्व है एवं समाज के सफल मार्गदर्शन होते हैं। विद्या नामक धन मनुष्य का अधिक सौंदर्य होता है, ये गुप्त से भी गुप्त धन है जिसका कभी कोई चोर चोरी नहीं कर सकता है। ये सेवानिवृत्त जरुर हुए है, पर सेवा के दायित्वों से नहीं। जिला स्काउट मास्टर शिव शरण सिंह, उर्दू शिक्षक संघ के जिलाध्यक्ष मोईनुल हसन, शिक्षक राम प्रकाश अवस्थी, ब्लॉक अध्यक्ष सुरेश सिंह, शशिप्रकाश श्रीवास्तव ने शिक्षकों के संबोधन में कहा कि आपकी इस यात्रा के दौरान हजारों बच्चों का भविष्य बना है। आपकी आगे की यात्रा बेहतर रहे। इस मौके पर रामनरेश पाल, बेग साहब, धर्म कुमारी, शैल श्रीवास्तव, अनीता, फात्मा, शिवाकांत, रामेश्वरनाथ, अमर सिंह यादव, फरजाना, ऊषा सिंह, करुणा यादव, ब्रिजेश, उनसिया असगर, विनोद यादव, रामभरत राजभर, गरिमा सिंह, ऊषा, कमल अहिरवार, हेमलता, अर्चना बौद्ध, महफूज, डॉ0 मनोज, राजेन्द्र सिंह, सुधीर कुमार, कृष्णाशंकर यादव, धर्मेन्द्र सिंह चौहान, अवनीश कुमार, हरिबिन्दर, सत्यभामा, विश्रामा, राजकुमारी, शिवेंद्र सिंह, राम गोपाल, आएशा अफरोज, धर्मेन्द्र तिवारी, सुनीता, रामेश्वरी, मनोज, अंकिता, राजेश, रामनरेश, संदीप वर्मा, वरुणेंद्र सिंह, विजयकांत आदि लोग मौजूद रहे।

यह विद्यालय न होता तो हम न होते मास्टर : गुड्डू मास्टर

रायबरेली। तीन दशक से अधिक समय तक परिषदीय विद्यालयों में सेवा देने के बाद सेवानिवृत्त होने जा रहे हैं प्रधानाध्यापक शफीकुर्रहमान उर्फगुड्डू मास्टर अपना उद्बोधन देते समय बहुत ही भावुक हो गए उन्होंने कहा कि जिस विद्यालय में हमारा सम्मान हो रहा है इसी विद्यालय की वजह से ही हम मास्टर बने। अगर यह विद्यालय हमारे गांव में न होता तो हम आठवीं तक पढ़ाई न कर पाते। आज हमारे लिए बहुत ही भावुक वाला क्षण है कि जहां पर पढ़े उसी विद्यालय में आज हमारा सम्मान हो रहा है। यह थुलवासा हमारा गांव और हमारी शान भी है। हिलगी विद्यालय के बारे में उन्होंने कहा कि विद्यालय में शायद मीना मैम न होती तो उसकी चमक उतनी न हो पाती। मैनेजमेंट हमारा रहता था और मेहनत शिक्षिका मीना की रहती थी। उसका नतीजा है कि आज हिलगी का नाम बहुत आगे है।

प्रधान मंत्री द्वारा वर्चुवली बटन दबाकर कुल 25 सड़कों किया लोकार्पण

चर्चित राजनीति/संवाददाता

सुलतानपुर। विधान परिषद सदस्य द्वारा विकास खंड कुड़वार के ग्राम पंचायत भण्डरा परसरामपुर में प्रधान मंत्री द्वारा वर्चुवली बटन दबाकर कुल 25 सड़कों के लोकार्पण कार्यक्रम का सजीव प्रसारण देखा व सुना गया जनपद की पांचों विधानसभाओं में प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजनान्तर्गत बनी 9916.82 लाख रुपए की लागत से 149.640 किलोमीटर सड़कों का वर्चुअल लोकार्पण आजमगढ़ से प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने जिले को सड़कों की सौगात दी। इसी क्रम विकास खंड कुड़वार के ग्राम पंचायत भण्डरा परसरामपुर में आयोजित जनपद स्तरीय लोकार्पण कार्यक्रम में विधान परिषद सदस्य शैलेंद्र प्रताप सिंह ने बटन दबाकर सड़कों का लोकार्पण किया। उन्होंने अपने सम्बोधन कहा कि प्रधानमंत्री के नेतृत्व में देश का मान सम्मान विश्व स्तर पर बढ़ा है। उन्होंने कहा कि ग्रामीण स्तर पर क्षेत्र का चहुंमुखी विकास हो रहा है। ब्लॉक प्रमुख प्रतिनिधि योगेन्द्र प्रताप सिंह उर्फ बब्लू सिंह ने लोगों को संबोधित करते कहा कि क्षेत्र प्रदेश और देश का विकास तेज गति से हो रहा है। विधायक इसौली मो0 ताहिर खान ने कहा कि प्रदेश सरकार द्वारा क्षेत्र में सड़कों का जाल बिछाया जा रहा है। उन्होंने कहा कि इसौली विधानसभा में भदहरा से प्रतापपुर 7.200 किलोमीटर ?447.5,रंकेडीह से घुसियरिया 5.225 किलोमीटर ?377.17 लाख रुपए की लागत से सड़क का निर्माण हुआ है। इस अवसर पर अधिशासी अभियंता विजय चंद्रा, धर्मेंद्र कुमार, सुरेंद्र सिंह, वेद प्रकाश कश्यप, गोकुल यादव, अधिशासी अभियंता जेई कृष्ण कुमार मिश्र, आलोक कुमार सिंह, राधेश्याम यादव, मनीष, हिमांशु पाण्डेय, भंडरा ग्राम प प्रधान सतई राम, ग्राम विकास अधिकारी संतोष पाल आदि उपस्थित रहे।

सत्यमेव जयते सेवा संस्थान ने किया गरीब परिवार की पांच बेटियों का सामूहिक विवाह

चर्चित राजनीति/संवाददाता

ऊँचाहार, रायबरेली। सत्यमेव जयते सेवा संस्थान बाबूगंज की ओर से गरीब परिवारों की पांच बेटियां का सामूहिक विवाह वैदिक रीति रिवाज से संपन्न हुआ। बेटियों की जब एक साथ डोली उठी तो उनके परिजनों के चेहरे खुशी से खिल उठे। संस्थान के पदाधिकारियों एवं अन्य गणमान्य लोगों ने नए जीवन में कदम रखने वाले नवदंपति को आशीर्वाद दिया। शनिवार को बाबूगंज में एक उत्सव उत्सव लॉन में गाजे बाजे के साथ वैदिक रीति रिवाज से सत्यमेव जयते सेवा संस्थान की ओर से निर्धन परिवार की पांच कन्याओं का सामूहिक विवाह संपन्न हुआ। इसके पहले संस्थान की ओर से बारातियों का स्वागत किया गया। मंगलगीतों के बीच विवाह की रस्म वैदिक रीति से संपन्न हुई। जिसमें कु. आशमा संग परविन्द कुमार, कु. कोमल संग लाला, कु. रूमा संग पंकज, कु. रीता संग चंद्रप्रकाश व कु. पूजा संग मनभरन एक दूजे होकर दाम्पत्य जीवन में प्रवेश किया। सात फेरों के साथ कन्या पक्ष के परिजनों में खुशी की लहर दौड़ गई। संस्थान की ओर से नव दंपत्ति को यथा शक्ति दान दहेज के साथ उनके घरों को विदा किया गया। इस अवसर पर संस्थान के संरक्षक अजय गुप्ता, राकेश जायसवाल, सुनील साहू, विनोद मौर्य, विजय सोनी, आशीष गुप्ता, मनकेश मौर्य, रवि गुप्ता, राजेश जायसवाल, किशन गुप्ता, मुकेश सोनी, राजदेव साहू, सूरज यादव समेत अन्य गणमान्य लोगों ने नवदम्पत्ति को खुशहाल जीवन का आशीर्वाद दिया। संस्थान के अध्यक्ष राकेश जायसवाल ने अभ्यागतों एवं सभी सहयोगियों को कार्यक्रम की सफलता के प्रति आभार जताया।

सड़क निर्माण में हुई धांधली के खिलाफ ग्रामीणों ने किया प्रदर्शन

चर्चित राजनीति/संवाददाता

महराजगंज, रायबरेली वैसे तो भ्रष्टाचार के मामले में लोक निर्माण विभाग की ख्याति हर तरफबिखरी है मतलब हर जनमानस उसकी गुणवत्ता से परिचित है किंतु जब उसक द्वारा बनाई गई सड़क मात्र 24 घंटे में ही उधड़ने लगे तो आम जनमानस में रोष होना स्वाभाविक है। हम बात कर रहे है क्षेत्र के हरदोई ग्राम सभा की जहां गांव के लोगो ने सड़क निर्माण में की गई धांधली को लेकर ठेकेदार व् लोकनिर्माण विभाग के खिलाफजम कर प्रदर्शन किया। आप को बता दे की महराजगंज बछरांवा मुख्य सड़क मार्ग से हरदोई गांव तक 1 किलोमीटर लम्बी सड़क का निर्माण किया जा रहा है। रविवार को मानकों की अनदेखी कर बनाई जा रही सड़क पर तारकोल व गिट्टी की कमी की वजह से जगह जगह उधड़ती सड़क देख ग्रामीण आक्रोशित हो गए। उन्होंने ठेकेदार के खिलाफनारेबाजी करते हुए प्रदर्शन शुरू कर दिया। ग्रामीणों का आरोप है कि सड़क निर्माण में ठेकेदार ने जमकर खेल किया है। मानक से कम और घटिया निर्माण सामग्री लगाई है। इसी का नतीजा है कि सड़क उखड़ने लगी है। प्रदर्शन कर रहे महेंद्र कुमार, राम देव, अनुपम सहित दर्जन भर ग्रामीणों ने कहा कि लोक निर्माण विभाग के अधिकारीयों की उदासीनता से मानक विहीन सड़क बनाई जा रही है। यदि मानक को ठीक न किया गया तो ग्रामीण आंदोलनके लिए बाध्य होंगे। जे ई हरिवंश गोपाल ने बताया कि ग्रामीणों से बात हुई है। रोलर खराब हो गया था। जिसके कारण कुछ समस्या आई थी। मानक को ध्यान मे रख कर ही निर्माण करने के निर्देश दिए गए है।

कोतवाली परिसर में आयोजित पीस कमेटी की बैठक सम्पन्न

चर्चित राजनीति/संवाददाता

ऊँचाहार, रायबरेली। कोतवाली परिसर में रविवार को पीस कमेटी की बैठक आयोजित की गई। इसमें होली, रमजान पर्व को लेकर चर्चा की गई। नागरिकों से सुझाव मांगे गए। और शांति व्यवस्था में सभी से सहयोग करने की अपील की गई। एसडीएम सिद्धार्थ चौधरी ने कहा कि सभी त्योहार खुशियों के पर्व होते हैं। जिन्हें आप सभी शांति एवं सौहार्दपूर्ण वातावरण में मनाएं। किसी भी धार्मिक एवं पर्व को राजनीतिक ना बनाएं। क्षेत्राधिकारी अरुण कुमार नौहवार ने कहा कि त्योहारों के समय कुछ बातों पर विशेष ध्यान देना चाहिए, ताकि कोई अनहोनी घटना घटित ना हो। जुलूस के दौरान विद्युत तारों से दूर रहें, ताकि कोई अप्रिय घटना न होने पाए। शराब के नशे में वाहन ना चलाएं, इंटरनेट मीडिया की अफवाहों से दूर रहें। त्योहारों में अश्लील गीत ना बजाएं। माननीय न्यायालय के दिए निर्देशानुसार ध्वनि प्रदूषण से बचें। ऐसे गीत ना बजाएं जिससे किसी की धार्मिक भावना को ठेस पहुंचे। इंस्पेक्टर अनिल कुमार सिंह, वरिष्ठ उपनिरीक्षक लोकेंद्र सिंह, मेहंदी हसन, ओमप्रकाश साहू, मो शाहिद उर्फ राजू, विनय शुक्ल बाबा, मनीष सिंह, अमरपाल यादव, अनिल यादव, शैलेंद्र गुप्ता, राजेंद्र कुमार, पवन तिवारी समेत काफी संख्या में लोग मौजूद रहे।

देवानंदपुर में पं0 श्रीश चंद्र दीक्षित पर्यावरणीय पार्क का उद्यान मंत्री ने किया शिलान्यास

चर्चित राजनीति/संवाददाता

रायबरेली। राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) उद्यान,कृषि विपणन,कृषि विदेशी व्यापार एवं कृषि निर्यात उ0प्र0 दिनेश प्रताप सिंह ने रायबरेली नगर क्षेत्र के देवानंदपुर में एकीकृत बागवानी विकास मिशन योजना अंतर्गत निर्मित एक विशाल पार्क के निर्माण कार्य का शिलान्यास किया। इस पार्क का नाम पूर्व सांसद और प्रशासनिक अधिकारी श्रीश चंद्र दीक्षित के नाम पर होगा। उद्यान मंत्री ने उनके पुत्र डॉ0 विजय दीक्षित के साथ इस पार्क के निर्माण कार्य का शुभारंभ किया। श्रीश चंद्र को याद करते हुए उद्यान मंत्री ने कहा कि उन्होंने एक राजनीतिज्ञ और प्रशासनिक अधिकारी होने के नाते देश और समाज को बहुत कुछ दिया है। उनके जीवन दर्शन से हम सभी को प्रेरणा लेनी चाहिए। उन्होंने ने कहा कि इस पार्क के विकसित हो जाने से आसपास के लोगों को शुद्ध हवा मिलेगी, साथ ही पर्यावरण का भी संरक्षण होगा। पार्क में लोगों के घूमने फिरने के साथ योगस्थल और औषधीय पौधों का भी रोपण किया जाएगा। जिससे वनस्पति विद्यार्थियों को भी लाभ होगा। उद्यान मंत्री ने कहा कि इस पार्क का उद्देश्य लोगों की सेहत का ध्यान रखना है। जिससे स्वास्थ्य के साथ पर्यावरण को भी बचाया जा सके। इस अवसर पर उन्होंने जनपद स्तरीय गोष्ठि को भी संबोधित किया। जिसमें जनता की समस्याओं पर विचार विमर्श किया गया। उन्होंने भरोसा दिलाया कि जनता की समस्याओं को प्राथमिकता पर रखा जाएगा और सरकार और प्रशासन के सहयोग से उसका शीघ्र निस्तारण कराया जाएगा।इस अवसर पर उद्यान विभाग के कर्मचारी गण,जिला अध्यक्ष बुद्धिलाल के अतिरिक्त आमजन उपस्थित रहे।

स्थगन आदेश के बावजूद रात में हो गया पक्का निर्माण

संवाददाता,ऊँचाहार, रायबरेली। एसडीएम न्यायालय द्वारा विवादित भूमि पर स्थगन आदेश पारित करने के बावजूद रात में जबरन पक्का निर्माण कर लिया गया । दूसरे पक्ष ने मामले में तत्काल हस्तक्षेप करके विधिक कार्रवाई का अनुरोध किया है । मामला तहसील क्षेत्र के रोहनिया ब्लाक के अंतर्गत आने वाले उसरैना चौराहे के पास का है। गांव की भूमि संख्या 3175 में गांव के अशोक कुमार शह खातेदार है । उनका आरोप है कि इस भूखंड के दूसरे खातेदार अवैध रूप से उनकी भूमि पर कब्जा कर रहे है । इस मामले में बंटवारे का एक वाद एसडीएम न्यायालय में विचाराधीन है । जिसमें उपखंड मजिस्ट्रेट ने बीती 6 मार्च को स्थगन आदेश जारी किया था । इसके बावजूद शनिवार की रात विवादित भूमि पर जबरन पक्का निर्माण कर लिया गया है । इससे पूर्व कोतवाली में भी दोनो पक्षों के मध्य आपसी सुलह हुई थी कि मामले के निस्तारण तक विवादित स्थल पर यथास्थिति बनाए रखी जाए ।

प्रजापति महासभा द्वारा सामूहिक विवाह में 11 जोड़ों ने लिए अग्नि के फेरे

चर्चित राजनीति/संवाददाता

कानपुर। कानपुर नगर, रविवार को प्रजापति महासभा कानपुर द्वारा 10वा प्रजापति सामूहिक विवाह समारोह सम्पन्न हुआ, जिमसें 11 जोडो ने एक दूजे का हाथ थामा और जीवन भर एक दूसरे का साथ निभाने का वचन लिया। इस अवसर पर धूमधाम के साथ 11 दूल्हे घोडे में बैठकर विवाह स्थल दिव्यांशी गार्डेन, बर्रा पहुंचे जहां उनका द्वार पर भव्य स्वागत किया गया। कानपुर के सांसद, विधायक व कई मंत्रियों ने नव युगलों को अपना आर्शीवाद दिया। 11 जोडो का विवाह पूरी रीति-रिवाज और धूमधाम के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर प्रजापति महासभा कानपुर के अध्यक्ष विनोद कुमार प्रजापति ने बताया कि समारोह में उपस्थित समाज के पदाधिकारियों व अन्य लोगों ने वर-वधू को सदैव माता-पिता का संरक्षण देने का भरोसा दिया है तथा सदैव अपने बडे बुजुर्गो का सम्मान करने, पति धर्म निभाने की सलाह व आर्शीवाद के साथ नव जोडो को उपहार भेंट करके उनकी सम्मान के साथ विदाई की। बताया कि हमारा उददेश्य समाज के व्यक्ति को सामाजिक, आर्थिक, शिक्षा क्षेत्र में जागरूक करना एवं उनके हक, अधिकारों की रक्षा करना है। हम हर वर्ष कमजोर परिवारों के पुत्र-पुत्री की शादिंया सामूहिक विवाह समारोह के माध्यम से करते है, इससे समाज की बुराईयों से लोगों का बचाव होता है। इस अवसर पर मंत्री राकेश सचान, विधायक महेश त्रिवेदी, अभिजीत सांगा, सरोज कुरील, विधायक अरूण पाठक, दयाराम प्रजापति, क्षेत्रीय अध्यक्ष प्रकाश पाल आदि ने सदैव प्रजापति समाज के लोगों की मदद करने का भरोसा दिया। कार्यक्रम में अध्यक्ष विनोद कुमार प्रजापति, मदनपाल, मुकेश वर्मा, डा0 संजय, डा0 मनोज, आरपी प्रजापति, दीपक, संगीता, सुंदरलाल प्रजापति, गायत्री, रानी, डा0 लोनी आदि हजारो की संख्या में प्रजापति समाज के लोग उपस्थित रहे।

पीएम कुसुम योजनान्तर्गत सोलर पम्प के लाभार्थियों को प्रमाण पत्र का किया गया वितरण

संवाददाता, प्रतापगढ़। माननीय मुख्यमंत्री जी द्वारा जनपद कुशीनगर में महात्मा बुद्ध कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय का शिलान्यास किया गया, इस अवसर पर जनपद-प्रतापगढ़ के कृषि भवन सभागार में कृषकों की उपस्थिति में कार्यक्रम का सजीव प्रसारण किया गया, जिसमें मा0 विधायक विश्वनाथगंज जीतलाल पटेल एवं विधायक सदर प्रतिनिधि अरूण मौर्य मुख्य अतिथि रहे। विधायक विश्वनाथगंज द्वारा कार्यक्रम में उपस्थित पीएम कुसुम योजनान्तर्गत सोलर पम्प के लाभार्थियों हरी लाल, भूपेन्द्र प्रताप सिंह, लियाकत अली एवं कमलेश कुमार यादव इत्यादि कृषकों को चयन प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया तथा सोलर पम्प से होने वाले लाभों के बारे में जानकारी दी गई। विधायक विश्वनाथगंज द्वारा बताया गया कि सोलर पम्प के उपयोग से बिजली की बचत होती है जिससे कृषकों की आय दोगुनी होने में मदद मिलती है। इस मौके पर उप कृषि निदेशक विनोद कुमार यादव द्वारा बताया गया कि वित्त वर्ष 2023-24 हेतु 312 लाभार्थियों का चयन किया गया है।

शासन की योजनाओं का लाभ पाने के लिए जागरूक होना जरूरी- अपर जिला जज नीरज कुमार बरनवाल

संवाददाता, प्रतापगढ़। जनपद न्यायाधीश/अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकरण अब्दुल शाहिद के निर्देशानुसार मान्धाता स्थित सनराइज कान्वेंट एण्ड पब्लिक इण्टर कालेज में जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के तत्वावधान में विधिक साक्षरता एवं जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि अपर जिला जजध्सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण नीरज कुमार बरनवाल ने कार्यक्रम में उपस्थित लोगों को सम्बोधित करते हुए कहा कि शासन की योजनाओं का लाभ पाने के लिए जागरूक होना जरूरी है। उन्होंने बाल सेवा योजना की जानकारी देते हुए कहा कि सन 2020 के बाद जिन बच्चों के माता या पिता या दोनो की मृत्यु हो गई है तो ऐसे बच्चों को शासन की ओर से 4000 रुपए दिए जाने की व्यवस्था है इसके लिए लोगों को जागरूक होना होगा । उन्होंने नि:शुल्क विधिक सहायता के संबन्ध में विस्तार से जानकारी दिया । इस मौके पर एडवोकेट मिडिएटर विश्वनाथ प्रसाद त्रिपाठी ने जिला विधिक सेवा प्राधिकरण द्वारा संचालित कार्यक्रमों के संबन्ध में विस्तार से जानकारी दिया । इस अवसर पर ए डी जी सी क्रिमिनल देवेश त्रिपाठी ने महिलाओं से सम्बन्धित अपराध एवं पाक्सो अधिनियम के प्रति लोगों को जागरूक किया । विद्यालय के प्रबंधक सूर्य प्रकाश शुक्ला एडवोकेट ने कार्यक्रम का संयोजन किया । कार्यक्रम में वरिष्ठ अधिवक्ता सुरेश नारायण त्रिपाठी, जैनुल हसन एडवोकेट, लल्लन सिंह, असलम खां, कृष्ण कुमार मिश्र, राजकुमार शुक्ला , सहित भारी संख्या में लोगों की उपस्थिति उल्लेखनीय रही ।

यमुना प्राधिकरण के अधिकारियों पर भ्रष्टाचार का आरोप

संवाददाता, नोएडा। यमुना प्राधिकरण के अधिकारियों पर भ्रष्टाचार के आरोप लगे है। आवंटी ने अवैध वसूली का आरोप लगाया है।उसने आरोप लगाया कि अलग-अलग कार्य के लिए अलग-अलग मोटी रकम वसूली जाती है। सीईओ से शिकायत के बाद इस मामले में सीईओ ने जांच के आदेश दिए हैं। आरोप है कि आवंटियों को अपने प्लॉट को ट्रांसफर करने के लिए या अन्य कामों के लिए टेबल दर टेबल पैसे की डिमांड की जाती है। हर टेबल का पैसा फिक्स होने के साथ-साथ भी लोगों को इधर-उधर भगाया जाता है। आवंटी पवन सिंह ने बताया कि मैं यमुना प्राधिकरण का अलॉटी हूं। मेरा एक प्लॉट ट्रांसफर हुआ है। यहां पर भ्रष्टाचार चरम पर है। हर टेबल पर कहीं पैसों की डिमांड होती है। कहीं 200 रुपए तो कहीं 100 रुपए फिक्स किए हुए हैं। आवंटियों को अपना काम करने के लिए प्रत्येक टेबल पर कहीं 100 तो कहीं 200 रुपए प्रति मीटर के हिसाब से देने पड़ते हैं। मैंने परेशान होकर अधिकारियों से जब अपनी बात रखी तो मुझे फटकार लगाते हुए भगा दिया। प्राधिकरण के अंदर प्रत्येक टेबल पर जबरन वसूली होती है। एक आवंटी ने आरोप लगाया की लोगों से जबरिया वसूली से पैसा लिया जाता है। प्राधिकरण के अंदर यदि एक दिन कोई आवंटी पैसा देने में डिले हो जाता है तो उसका प्लाट या उसका भूखंड कैंसिल कर दिया जाता है। प्राधिकरण के अंदर डेढ़ साल से अपना रिफंड करने के लिए घूम रहे आवंटी ने बताया कि मुझे रिफंड के डेढ़ करोड़ रुपए डेढ़ साल में भी नहीं वापस मिल पाए हैं।

ग्रेनो प्राधिकरण ने बिसरख और तुस्याना में ढहाया अवैध निर्माण

संवाददाता, नोएडा। ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण ने ग्राम तुस्याना की अधिग्रहित व कब्जा प्राप्त जमीन और बिसरख के डूब क्षेत्र की जमीन पर बन रहे अवैध निर्माण को तोड़ दिया। दोनों जगह पर प्राधिकरण की टीम ने करीब 1.60 लाख वर्ग मीटर जमीन मुक्त कराई है। तुस्याना में अधिग्रहण से मुक्त कराई गई जमीन की कीमत करीब 100 करोड़ रुपये होने का आकलन है। ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण के ओएसडी हिमांशु वर्मा ने बताया कि गांव तुस्याना के खसरा नंबर 987, 988 और 989 की जमीन प्राधिकरण की अधिग्रहित व कब्जा प्राप्त जमीन है। कॉलोनाइजर इस जमीन पर कॉलोनी काट रहे थे। परियोजना विभाग के वर्क सर्किल 3 के प्रभारी मनोज सचान, प्रबंधक प्रशांत समाधिया, सहायक प्रबंधक गौरव बघेल व सहायक प्रबंधक मनोज चौधरी की टीम प्राधिकरण के सुरक्षाकर्मियों के साथ मौके पर पहुंची और अवैध अतिक्रमण को ढहा दिया। टीम ने करीब 50 हजार वर्ग मीटर जमीन को अवैध कब्जे से मुक्त करा लिया है। 5 जेसीबी और दो डंफर का इस्तेमाल कर यह कार्रवाई की गई। इसी तरह बिसरख के डूब क्षेत्र में खसरा नंबर 1, 2 व 3 की लगभग 1.10 लाख वर्ग मीटर जमीन को भी अतिक्रमण से मुक्त कराते हुए प्राधिकरण ने कब्जे में ले लिया है। यह प्राधिकरण की अधिग्रहित व कब्जा प्राप्त जमीन है। ओएसडी ने चेतावनी दी है कि प्राधिकरण की अधिसूचित एरिया में जमीन कब्जाने वालों को बख्शा नहीं जाएगा। उन्होंने परियोजना विभाग के सभी वर्क सर्किल प्रभारियों को अपने एरिया में जमीन पर अतिक्रमण रोकने के लिए कड़ी नजर रखने और अतिक्रमण की सूचना मिलते ही कार्रवाई करने के निर्देश दिए हैं। प्राधिकरण की एसीईओ अन्नपूर्णा गर्ग ने कहा है कि अवैध रूप से जमीन कब्जा कर काटी जा रही कॉलोनी में अपनी गाढ़ी कमाई न फंसाएं।

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर महिलाओं का सम्मान

चर्चित राजनीति/संवाददाता

कानपुर। कानपुर महाशिवरात्रि व अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस समारोह धूमधाम से मनाया गया। विशिष्ट अतिथि के रूप में सरोज अग्रवाल ने कार्यक्रम की शुरूआत भोले बाबा के चित्र पर दीप प्रज्वलित कर किया गया। उन्होने अपने सम्बोधन में कहा कि महिलाओं सशक्तिकरण पर केंद्र सरकार लगातार कार्य कर रही है, महिलाओ को आगे बढ़ने से भष्टाचार पर काफी हद तक अंकुश लगाया जा सकता है। प्रीती सिह ने गीत कोमल है कमजोर नही तू, शक्ति का नाम ही नारी है, जग को जीवन देनी वाली मौत भी तुझसे हारी है गाया। जिसको महिलाओ द्वारा काफी सराहा गया। ओम जन सेवा संस्थान की अध्यक्ष शिव देवी अग्रहरि (सीमा) ने कहा कि महिलाओं के उपलब्धियों व अधिकारों को मनाने के लिए समर्पित है। महिलाओ को अपने अधिकार जानने चाहिये, महिलाये कमजोर नही है। अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस को मनाने का उद्देश्य महिलाओं को समान अधिकार प्रदान करना है। खुद एक महिला होने पर गर्व होता है। भारतीय संस्कृति को ध्यान में रखकर महिलाओं को आगे बढाने में हम सबको मिलकर कार्य करना है। इसमें प्रमुख रूप से सरोज अग्रवाल, प्रीति सिंह, अर्चना सिंह, श्वेता सिह, सोना सिह, रोली सिह, निलंबरी पाण्डेय, निर्मला सहित आदि लोग मौजूद रहे।

आशापुर अठगवा विद्युत कैंप में हुई एक लाख की राजस्व वसूली

एक दर्जन बकायदारो के काटे गए विद्युत कनेक्शन

चर्चित राजनीति/संवाददाता

प्रतापगढ़। तहसील क्षेत्र के विद्युत उपकेंद्र उड़ैयाडीह के अवर अभियंता जय राज राजपूत के नेतृत्व में ग्राम आशापुर अठगवा मे रविवार को विद्युत उपभोक्ता सेवा शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें बकायेदार एक दर्जन विद्युत उपभोक्ताओं का संयोजन विद्युत बिल भुगतान नहीं होने के कारण विच्छेदित कर दिया गया। इस दौरान बकायेदार उपभोक्ताओं में हड़कंप मच गया। विद्युत उपभोक्ता सेवा शिविर में लगभग एक लाख रुपए की राजस्व वसूली किया गया। इस दौरान अवर अभियंता जय राज राजपूत ने कहा कि एक दर्जन विद्युत बिल बकाया दारो के कनेक्शन काटे गए हैं यदि वह चोरी से विद्युत केबल जोड़कर बिजली चलाते पकड़े गए तो उनके खिलाफ विधिक कार्रवाई कराई जाएगी। उन्होंने सभी से अच्छी विद्युतापूर्ति के लिए सहयोग की अपील किया। विद्युत उपभोक्ता सेवा शिविर में प्रमुख रूप से अवर अभियंता जय राज राजपूत, लाइनमैन गोविंद पाल, विजय सिंह, अरुण सिंह, महेंद्र उपाध्याय, राज केश्वर यादव, मोहित सिंह, शिवकुमार, अधिकारी कर्मचारी सहित तमाम लोग मौजूद रहे।

पत्रकार परिवारों के हितार्थ निशुल्क स्वास्थ्य शिविर

चर्चित राजनीति/संवाददाता

कानपुर। कानपुर से खबर जीएसवीएम मेडिकल कालेज, हैलट पीजीआई (जीटी रोड मे पत्रकारो और परिवारों की नि:शुल्क स्वास्थ्य परीक्षण, जांचे और उपचार किए गए कानपुर प्रेस क्लब के अध्यक्ष सरस बाजपेई महामंत्री शैलेश अवस्थी तथा पूर्व अध्यक्ष अवनीश दीक्षित पूर्व महामंत्री कुशाग्र पांडे के आवाहन पर जीएसवीएम मेडिकल कालेज के प्राचार्य डॉक्टर संजय काला व डॉ आरके सिंह मनीष सिंह के संयोजन में पत्रकार परिवारों के लिए स्वास्थ्य परीक्षण हेतु एक शिविर का आयोजन किया गया स्वास्थ्य शिविर में मेडिकल कॉलेज के समस्त वरिष्ठ डॉक्टरों राघवेंद्र गुप्ता डा जेएस कुशवाहा डा विशाल गुप्ता डा नीना गुप्ता डॉ अशोक डॉ महेंद्र सिंह डॉ विनय कटियार डॉ सुबोध यादव डा असरफआदि डॉक्टरो की टीम मौजूद रही, इस दौरान मौजूद पत्रकारों ने अपने स्वास्थ्य का परीक्षण कराया पत्रकार साथियों ने डॉक्टर्स का आभार व्यक्त किया।

संविधान की बदौलत कायम है देश में भाईचारा

सेक्टर बूथ को मजबूत करने मे जुटे बसपाई

संवाददाता, प्रयागराज। बहुजन समाज पार्टी के तत्वाधान में बसपा प्रमुख बहन मायावती के निर्देश पर गांव चलो अभियान के तहत विधानसभा फूलपुर के सेक्टर बाबूगंज के बूथ पाली पर विधानसभा अध्यक्ष शिवबरन पासी की अध्यक्षता में कैडर बैठक आयोजित की गई है। जिला कार्यकारिणी के सदस्य उच्च न्यायालय के अधिवक्ता रामबृज गौतम व पूर्व मण्डल प्रभारी जगन्नाथ पाल बतौर मुख्य अतिथि अपने सम्बोधन में कहा कि बसपा कार्यकर्ताओं के मेहनत के बदौलत राष्ट्रीय स्तर की पार्टी है जबकि बीजेपी और कांग्रेस पूंजीपतियों के बदौलत राष्ट्रीय स्तर का दर्जा प्राप्त है। संविधान की बदौलत देश व प्रदेश में भाईचारा कायम है जिसका श्रेय संविधान निर्माता बाबा साहेब अम्बेडकर को जाता है। नेता द्वय ने आगे बताया कि भारतीय संविधान न केवल इंसान अपितु पशु-पंछियों तथा पेड़-पौधों को भी सुरक्षा प्रदान करता है। बहुजन समाज पार्टी निष्ठावान और हर प्रकार से मजबूत प्रत्याशी को ही लोकसभा चुनाव में उतारेगी और पूरी ताकत के साथ प्रयागराज की दोनों लोकसभा सीट जीतकर परचम लहरायेगी। विधानसभा प्रभारी घनश्याम पटेल और चिंतामणि वर्मा ने पार्टी कार्यकर्ताओं व पदाधिकारियों से जी जान से जुटकर लोकसभा चुनाव के लिए कमर कस कर जनता के बीच जाकर बीएसपी व बहन मायावती जी के सन्देश को जन-जन तक पहुचाने का कार्य करे। नेता द्वय ने आगे बताया कि वर्तमान केंद्र व प्रदेश की सरकार की नीतियां जन विरोधी है। मौजूदा हुकूमत सरकारी प्रतिष्ठानों को बेचकर रोजगार के अवसर समाप्त कर पूंजीपतियों के हाथों खेल रही है। बहुजन समाज पार्टी बाबा साहेब व काशीराम के अधूरे सपनो को पूरा करके सर्वसमाज के उत्थान के लिए संकल्पबद्ध है।

कैडरबैठक में अशोक कुमार,राकेश बर्मा,राजा बाबू सोनी,शंकर लाल बिंद,उदय नारायण,भोलानाथ भारतीया, रामबहादुर,अजेय कुमार,राम लखन भारतीय,राम कैलाश भारतीय,श्रीनाथ भारतीय, इंद्रजीत,बब्बू गौतम,नन्द लाल भारतीया,राजवंती देवी, रामसवारी,लक्ष्मी देवी,गीता भारतीय,अनीता देवी के साथ सैकड़ों लोग उपस्थित रहे।

सबका साथ सबका विश्वाश नामक तीन दिवसीय प्रदर्शनी का विधायक प्रकाश द्विवेदी ने किया शुभारंभ

संवाददाता, बांदा। निदेशक,सूचना एवं जनसंपर्क विभाग उत्तर प्रदेश लखनऊ के आदेशानुसार जनपद बांदा में ष्सबका साथ सबका विकास सबका विश्वास सबका प्रयासष् नामक तीन दिवसीय प्रदर्शनी का आज शुभारंभ संकट मोचन मंदिर के सामने सदर विधायक प्रकाश द्विवेदी द्वारा किया गया, और जन कल्याणकारी योजनाओं के विषय में जानकारी दी गई तथा यह भी जनपद वासियों से अपील किया कि सभी लोग आए और सूचना एवं जनसंपर्क विभाग बांदा द्वारा लगी प्रदर्शनी का अवलोकन कर शासन की योजनाओं से लाभांवित हो जैसे कि एक जनपद एक उत्पाद वकवच, को मिली अंतरराष्ट्रीय पहचान, डबल इंजन की सरकार, विकास की दो गुनी रफ्तार निवेश फ्रेंडली नीतियां, सिंगल विंडो, पोर्टल निवेश मित्र के माध्यम से ऑनलाइन सेवाएं उपलब्ध,इज ऑफ डूइंग बिजनेस रैंकिंग में अग्रणी राज्य, सर्वाधिक उपभोक्ताओं वाला प्रदेश, एक्सप्रेसवे, इंटरनेशनल एयरपोर्ट, पांच शहरों में मेट्रो संचालित एवं 5 में निर्माणाधीन तथा कुछ में प्रस्तावित सर्वाधिक एमएसएमई वाला राज्य, इंडस्ट्रियल लैंड बैंक, ग्लोबल डेटा सेंट्रल हब एवं एजुकेशन व मेडिकल हब बनने की पूर्व अग्रसर ,निर्बाध विद्युत आपूर्ति,प्रचुर जल संसाधन, खाद्यान्न, दुग्ध,चीनी, आलू, एथेनॉल उत्पादन में देश में प्रथम स्थान आदि लाभान्वित करने वाली नीतियों की प्रदर्शनी लगी विधायक सदर बांदा द्वारा एवं मुख्य विकास अधिकारी बांदा वेद प्रकाश मौर्य द्वारा प्रदर्शनी का अवलोकन किया गया कार्यक्रम में उपस्थित विधायक प्रतिनिधि रजत सेठ, जिला सूचना अधिकारी राम जी दुबे,अतिरिक्त जिला सूचना अधिकारी शारदा निषाद,सूचना विभाग समस्त स्टाफवा पत्रकार बंधु गण उपस्थित रहे ।

स्वदेशी शिल्प मेले का पूर्व मंत्री प्रतिनिधि विनोद पांडेय ने किया शुभारंभ

चर्चित राजनीति/संवाददाता

पट्टी। तहसील मुख्यालय पर कस्बे के मेला ग्राउंड में रविवार को स्वदेशी शिल्प मेले का शुभारंभ सूबे के पूर्व कैबिनेट मंत्री राजेंद्र प्रताप सिंह उर्फ मोती सिंह के प्रतिनिधि विनोद पांडेय के द्वारा फीता काटकर किया गया।जानकारी के लिए बता दें कि स्वदेशी शिल्प मेले में खादी, हैंडलूम, हैंडीक्राफ्ट, गिफ्ट, जड़ीबूटी एवं ग्रामोद्योग के नामचीन दुकानदारों का भव्य समागम नगर के मेला मैदान में हुआ है। मीडियाकर्मियों से बातचीत करते हुए पूर्व मंत्री प्रतिनिधि ने कहा भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के सपने का स्वरूप बताते हुए देश के सभी नागरिकों के आत्मनिर्भर वाली तस्वीर का मेला बताते हुए उन्होंने अयोजको एवं क्षेत्रवासियों को शुभकामनाएं दी। इस दौरान पुरोहित श्याम शंकर द्विवेदी जी द्वारा वैदिक मंत्रोच्चार के साथ सनातनी रीति रिवाज से ईश्वर से प्रार्थना करते हुए कार्यक्रम की शुरुआत की गई। आपको बता दें जेएमडी स्वदेशी शिल्प मेला हैंडलूम एंड हैंडीक्राफ्ट एवं कंज्यूमर का आयोजन आर एम मेमोरियल चौरिटेबुल ट्रस्ट के द्वारा किया गया है। उद्घाटन समारोह में पहुंचे अतिथियों का अध्यक्ष हिमांशु तिवारी एवं सचिव शिवाकांत पांडेय पत्रकार, वरिष्ठ पत्रकार राकेश तिवारी व विजय पाठक द्वारा स्वागत किया गया। कार्यक्रम में प्रमुख रूप से पूर्व कैबिनेट मंत्री प्रतिनिधि विनोद पांडेय, तहसीलदार मनोज कुमार राय, कोतवाल दीप नारायण, प्रधान सुरेश शुक्ला, शारदा प्रसाद द्विवेदी, विपिन पांडेय, रामचरित्र वर्मा, सुरेश जायसवाल, अरविंद कुमार समेत तमाम संभ्रांत लोग मौजूद रहे।

विद्यालय के वार्षिक समारोह में बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित

चर्चित राजनीति/संवाददाता

कानपुर। कानपुर पुरवार शिशु मन्दिर, लिटिल केयर एकेडमी एवं लार्ड एजूकेशन इन्स्टीट्यूट के बच्चो द्वारा एक सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन सुभाष पार्क रामलीला ग्राउण्ड संजय गाँधी नगर नौबस्ता में किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ हनुमन्त बिहार चौकी इंचार्ज शनि कुमार चौधरी ने फीता काटकर किया। कार्यक्रम में आये मुख्य अतिथि पार्षद योगेन्द्र शर्मा ने अपने वक्तव्य में बच्चों और अभिवावक को बताया कि विद्यालय एक अच्छी शिक्षा के रूप में सम्पूर्ण वातावरण को ज्ञान और प्रकाश से ज्योतिमय करते है। श्री बलवन्त भाऊ पटवर्धन शास्त्री के द्वारा गणेश पूजन का कार्यक्रम का शुभारम्भ किया गया। इसके बाद बच्चों के द्वारा प्रस्तुत सरस्वती वन्दना की गयी। विद्यालय के बच्चों के द्वारा धनुष भंग, सीता स्वयंवर, श्रवण कुमार नाटक तथा अनेक प्रकार के देशभक्ति से परिपूर्ण कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये। श्री राकेश त्रिवेदी के द्वारा अपने वक्तव्य में बताया कि हमें अपने बच्चों के अन्दर भारतीय प्रवेश को समाहित करना चाहिए।

चेक गणराज्य की क्रिस्टीना पिस्जकोवा ने जीता 'मिस वर्ल्ड 2024' का खिताब

चेक गणराज्य की क्रिस्टीना पिस्जकोवा ने यहां एक भव्य कार्यक्रम में प्रतिष्ठित 'मिस वर्ल्ड 2024' का खिताब जीता। मिस लेबनान यास्मीन जायटौन दूसरे स्थान पर रहीं। मौजूदा मिस वर्ल्ड पोलैंड की कैरोलिना बिलावस्का ने अपनी उत्तराधिकारी को ताज पहनाया। अट्ठाइस साल बाद इस कार्यक्रम की मेजबानी करने वाले भारत का प्रतिनिधित्व 22 वर्षीय सिनी शेट्टी ने किया। मुंबई में जन्मीं शेट्टी प्रतियोगिता के शीर्ष चार में जगह बनाने में असमर्थ रहीं। उन्हें 2022 में 'फेमिना मिस इंडिया वर्ल्ड' का ताज पहनाया गया था। भारत ने छह बार यह प्रतिष्ठित खिताब जीता है, जिसमें रीता फारिया (1966), ऐश्वर्या राय (1994), डायना हेडन (1997), युक्ता मुखी (1999), प्रियंका चोपड़ा (2000), और मानुषी छिल्लर (2017) शामिल हैं। दुनिया के 112 देशों की प्रतियोगियों ने 71वीं मिस वर्ल्ड प्रतियोगिता में भाग लिया, जो यहां बीकेसी के जियो वर्ल्ड कन्वेंशन सेंटर में आयोजित की गई।

>>> बॉलीवुड <<<

जब करिश्मा कपूर ने लगाया था पूर्व पति संजय पर बेहद गंभीर आरोप, सास ने मारे प्रेंग्नेंसी में थप्पड़, पति ने दोस्तों के साथ सोने के लिए किया मजबूर

2003 में संजय से शादी करने वाली करिश्मा ने अपने बच्चों की कस्टडी के लिए कानूनी लड़ाई के साथ तलाक की याचिका दायर की थी, याचिका में करिश्मा ने दावा किया था कि संजय ने अपने हनीमून के दौरान उन्हें नीलाम करने की कोशिश की थी और उनकी कीमत भी अपने बच्चों में से एक के लिए तय की थी।

जब करिश्मा कपूर ने लगाया अपने पूर्व पति संजय कपूर पर आरोप, उन्हें अपने दोस्तों के साथ सोने के लिए किया मजबूर। उसने अपनी माँ से गर्भावस्था में उसे थप्पड़ मारने के लिए कहा। करिश्मा कपूर के पिता और दिग्गज अभिनेता रणधीर कपूर ने अपनी बेटी के तलाक के बाद अपने पूर्व दामाद संजय कपूर को थर्ड क्लास आदमी कहा था। सानिया कपूर के साथ करिश्मा कपूर की शादी किसी बुरे सपने से कम नहीं थी क्योंकि अभिनेत्री ने कथित तौर पर आरोप लगाया था कि वह उन्हें अपने दोस्तों के साथ सोने के लिए मजबूर करते थे और उन्हें नीलाम करने की भी कोशिश की थी। 2003 में संजय से शादी करने वाली करिश्मा ने अपने बच्चों की कस्टडी के लिए कानूनी लड़ाई के साथ तलाक की याचिका दायर की थी, याचिका में करिश्मा ने दावा किया था कि संजय ने अपने हनीमून के दौरान उन्हें नीलाम करने की कोशिश की थी और उनकी कीमत भी अपने बच्चों में से एक के लिए तय की थी। दोस्तों के साथ सोने के लिए, और जब उसने मना कर दिया तो उसने उसके साथ शारीरिक उत्पीड़न किया। करिश्मा कपूर ने कथित तौर पर यह भी कहा था कि कैसे अपनी गर्भावस्था के दौरान वह अपनी सास द्वारा दिए गए आउटफिट में से एक में फिट नहीं हो पाती थीं, जहां संजय ने अपनी मां से उन्हें थप्पड़ मारने का आग्रह किया था। अभिनेत्री ने घरेलू हिंसा का सामना करने के बारे में खुलासा किया और कथित तौर पर अदालत में इस भयावह घटना के बारे में बताया। करिश्मा ने घरेलू हिंसा को लेकर संजय और उनकी मां के खिलाफपुलिस में शिकायत भी दर्ज कराई थी, खार के एक पुलिस अधिकारी ने इस खबर की पुष्टि की थी और अपने बयान में कहा था, हमने मामला दर्ज कर लिया है और आरोपों के आधार पर मामले की जांच करेंगे। हम आने वाले सप्ताह में संजय और उसकी माँ से पूछताछ करेंगे। ऐसा 2016 में हुआ था। करिश्मा एक ख़राब शादी में थीं और उनका परिवार उनके साथ था और उन्होंने उन्हें इस दुविधा से बाहर निकाला और खुद का सबसे अच्छा संस्करण बनाया। करिश्मा 10 साल पहले अपने पूर्व पति संजय से अलग हो गई थीं। आज वह बेहद खुश और स्वस्थ्य हैं। अभिनेत्री ने अपने अभिनय करियर को भी पुनर्जीवित किया है और वह सारा अली खान के साथ मर्डर मुबारक में नजर आएंगी।

अनंत अंबानी और राधिका मर्चेंट की प्री-वेडिंग का मुकेश अंबानी ने 'रिलायंस परिवार के साथ मनाया जश्न

बॉलीवुड अभिनेता सलमान खान उन लोगों में शामिल थे, जिन्होंने गुजरात के जामनगर शहर में रिलायंस टाउनशिप में विस्तारित 'रिलायंस परिवार' के कर्मचारियों के लिए अनंत अंबानी और राधिका मर्चेंट के भव्य विवाह पूर्व समारोह के दौरान आयोजित एक विशेष कार्यक्रम में प्रस्तुति दी थी। भव्य कार्यक्रम की झलकियां एक वीडियो में देखी जा सकती हैं। सलमान खान को मंच पर अपने हिट ट्रैक पर परफॉर्म करते देखा जा सकता है और गायक अरिजीत सिंह को भावपूर्ण ट्रैक गाते हुए देखा जा सकता है। इससे पहले रिलायंस फाउंडेशन की संस्थापक और चेयरपर्सन नीता अंबानी ने अपने बेटे अनंत अंबानी की राधिका मर्चेंट के साथ प्री-वेडिंग फंक्शन पर बात की थी।अपने बेटे की शादी के बारे में बात करते हुए, उन्होंने कहा, जब मेरे सबसे छोटे बेटे अनंत और राधिका की शादी की बात आई, तो मेरी दो महत्वपूर्ण इच्छाएं थीं पहली, मैं अपनी जड़ों का जश्न मनाना चाहती थी। जामनगर हमारे दिलों में एक विशेष स्थान रखता है और इसका गहरा महत्व है। गुजरात वह जगह है जहां से हम आते हैं, यहीं पर मुकेश और उनके पिता ने रिफाइनरी का निर्माण किया था, और मैंने इस शुष्क और रेगिस्तान जैसे क्षेत्र को हरे-भरे टाउनशिप और एक जीवंत समुदाय में परिवर्तित करके अपना करियर शुरू किया। दूसरा, मैं चाहता था कि उत्सव हमारी कला और संस्कृति के लिए एक श्रद्धांजलि हो और हमारे प्रतिभाशाली रचनात्मक दिमागों के हाथों, दिलों और कड़ी मेहनत से बनाई गई हमारी विरासत और संस्कृति का प्रतिबिंब हो। संस्कृति और परंपरा ये नीव है भारतीय सभ्यता की और है प्राचीन और पवित्र भारत भूमि को मैं दिल से नमन करती हूँ। उत्सव के लिए दुनिया भर से मशहूर हस्तियां और मशहूर हस्तियां गुजरात में एकत्र हुईं। मेहमानों की सूची में शाहरुख खान, सलमान खान और अक्षय कुमार जैसे बॉलीवुड सेलेब्स और एमएस धोनी, रोहित शर्मा और सचिन तेंदुलकर जैसी प्रसिद्ध खेल हस्तियां शामिल थीं। रिलायंस के चेयरमैन मुकेश अंबानी के सबसे छोटे बेटे अनंत अंबानी इस साल के अंत में उद्योगपति वीरेन मर्चेंट की बेटी राधिका मर्चेंट के साथ शादी के बंधन में बंधने वाले हैं।

>>> बॉलीवुड <<<

प्रियंका चोपड़ा की कजिन मीरा चोपड़ा जल्द बनने वाली है दुल्हन

प्रियंका चोपड़ा की कजिन सिस्टर मीरा चोपड़ा ने कुछ महीने पहले बताया था कि वह अपने लॉन्ग टाइम ब्वॉयफ्रेंड से शादी करने वाली हैं । अब आखिरकार उनकी शादी की तारीख भी सामने आ गयी है। सोशल मीडिया पर मीरा चोपड़ा का वेडिंग कार्ड वायरल हो रहा है। प्रियंका चोपड़ा और परिणीति चोपड़ा के बाद अब उनकी कजिन मीरा चोपड़ा भी शादी के बंधन में बंधने वाली हैं। एक्ट्रेस मीरा चोपड़ा अपनी जिंदगी का एक नया चौप्टर शुरू करने जा रही हैं। कुछ समय पहले मीरा चोपड़ा ने फैंस के साथ गुडन्यूज शेयर की थी कि वह अपने लॉन्ग टाइम ब्वॉयफ्रेंड रक्षित केजरीवाल के साथ शादी करने जा रही हैं। अब एक्ट्रेस की शादी का कार्ड भी सामने आ गया है। साल 2018 में प्रियंका चोपड़ा ने निक जोनस के साथ जोधपुर के उम्मेद भवन में शाही तरीके से शादी की थी। वही पिछले साल परिणीति चोपड़ा ने राघव चड्ढा के साथ उदयपुर में सात फेरे लिये। प्रियंका और परिणीति की तरह मीरा चोपड़ा भी राजस्थान में ही शादी करने वाली हैं। वह जयपुर में रक्षित के साथ शादी के बंधन में बंधेंगी। मीरा चोपड़ा की शादी की रस्में शुरू होंगी और मीरा और रक्षित एक दूजे के हो जाएंगे । मीरा और रक्षित की शादी की रस्में मेहंदी के साथ शुरू होंगी। मेहंदी के बाद शाम को संगीत और कॉकटेल नाइट होगी। 1 दिन में हल्दी फिर शाम को मीरा और रक्षित फेरे लेंगे।

कार्तिक आर्यन ने शुरू की अपने करियर की सबसे बड़ी फिल्म की शूटिंग

बॉलीवुड एक्टर कार्तिक आर्यन एक प्रशंसक-निर्मित सुपरस्टार हैं और भूल भुलैया 2 के साथ अपनी सबसे बड़ी हिट देने के बाद वह तीसरे भाग भूल भुलैया 3 के लिए पूरी तरह तैयार हैं और सुपरस्टार अभिनेता आज फिल्म की शूटिंग शुरू करने के लिए तैयार हैं। कार्तिक आर्यन ने अपने इंस्टाग्राम पर भगवान का आशीर्वाद लेते हुए अपनी तस्वीर साझा की और बताया कि वह अपने करियर की सबसे बड़ी फिल्म की शूटिंग शुरू करने जा रहे हैं। दरअसल कार्तिक यह स्वीकार करने में असफल नहीं हुए कि भूल भुलैया 2 ने उन्हें सुपरस्टार अभिनेता बना दिया है। जब कार्तिक आर्यन ने भूल भुलैया 2 में अक्षय कुमार की जगह ली, तो दर्शकों ने उन्हें मिसफिट कहा और अभिनेता के कौशल पर संदेह किया, लेकिन उन्होंने उन्हें गलत साबित कर दिया और अब प्रशंसक यह देखने के लिए उत्सुक हैं कि वह अपने किरदार रूह बाबा के साथ स्क्रीन पर क्या जादू लाते हैं। एनिमल अभिनेत्री तृप्ति डिमरी भूल भुलैया 3 के लिए कार्तिक आर्यन के साथ शामिल हुईं। कार्तिक आर्यन शहर की नई सनसनी तृप्ति डिमरी के साथ रोमांस करते नजर आएंगे, निर्माताओं ने कुछ दिन पहले तृप्ति को भूल भुलैया 3 का चेहरा होने के बारे में सबसे बड़ी घोषणा की थी, और एनिमल के बाद यह उनकी सबसे बड़ी फिल्म है। तृप्ति और कार्तिक पहली बार भूल भुलैया 3 में काम करते नजर आएंगे और प्रशंसक इस नई जोड़ी को देखने के लिए उत्साहित हैं। ओजी भूल भुलैया क्वीन विद्या बालन भी इस फिल्म का हिस्सा बनती नजर आएंगी।

डाइट में शामिल करें सहजन की पत्तियां

सहजन की पत्तियों में कार्ब्स, प्रोटीन, मेग्निशियम, पोटेशियम, कैल्शियम और आयरन जैसे भरपूर गुण पाए जाते हैं। एक्सपर्ट्स के अनुसार, इसकी पत्तियों का जूस पीने से ब्लड प्रेशर कम होता है और वजन घटाने में भी सहायता मिलती है। इसकी पत्तियों के जूस का सेवन करने से आपकी और भी कई स्वास्थ्य संबंधी बीमारियों से राहत मिलती है। इसमें पाए जाने वाले पोषक तत्व डायबिटीज जैसी बीमारियों के लिए भी बहुत ही फायदेमंद होते हैं। यह आपके शरीर में ब्लड शुगर के लेवल को कंट्रोल करने में मदद करती हैं। लेकिन यदि आप डायबिटीज के मरीज हैं सहजन के पत्तियों में एंटी-ओबेसिटी गुण भी भरपूर मात्रा में पाए जाते हैं। मोटापे में भी आप इसकी पत्तियों का जूस बनाकर पी सकते हैं।

डायबिटीज और मोटापा रहेगा कंट्रोल

सहजन एक ऐसी पोष्टिक सब्जी है जो स्वास्थ्य के लिए बहुत ही फायदेमंद होती है। इनका सेवन करने से मोटापे, केलेस्ट्रॉल जैसी बीमारियां भी कंट्रोल में रहती हैं। इसे मोरिगां भी कहा जाता है। आप इसकी सब्जी के अलावा फूल और पत्तियों का सेवन भी कर सकते हैं। सहजन की पत्तियों में मल्टीविटामिन्स, एंटीऑक्सीडेंट्स और एमिनो एसिड जैसे भरपूर गुण पाए जाते हैं जो स्वास्थ्य के लिए बहुत ही फायदेमंद होते हैं। आयुर्वेद के अनुसार, सहजन को 300 से ज्यादा बीमारियों के लिए एक दवाई माना जाता है। तो चलिए बताते हैं कि इसकी पत्तियों के जूस का सेवन करने से आपको कौन-कौन सी बीमारियों से छुटकारा मिल सकता है।

क्या होते हैं फायदे

सहजन की पत्तियों में कार्ब्स, प्रोटीन, मेग्निशियम, पोटेशियम, कैल्शियम और आयरन जैसे भरपूर गुण पाए जाते हैं। एक्सपर्ट्स के अनुसार, इसकी पत्तियों का जूस पीने से ब्लड प्रेशर कम होता है और वजन घटाने में भी सहायता मिलती है। इसकी पत्तियों के जूस का सेवन करने से आपकी और भी कई स्वास्थ्य संबंधी बीमारियों से राहत मिलती है।

डायबिटीज में फायदेमंद

इसमें पाए जाने वाले पोषक तत्व डायबिटीज जैसी बीमारियों के लिए भी बहुत ही फायदेमंद होते हैं।

यह आपके शरीर में ब्लड शुगर के लेवल को कंट्रोल करने में मदद करती हैं। लेकिन यदि आप डायबिटीज के मरीज हैं तो एक बार डॉक्टर की सलाह लेकर ही इस जूस का सेवन करें।

वजन कम करने में सहायक

सहजन के पत्तियों में एंटी-ओबेसिटी गुण भी भरपूर मात्रा में पाए जाते हैं। मोटापे में भी आप इसकी पत्तियों का जूस बनाकर पी सकते हैं। आप नियमित तौर पर भी सहजन की पत्तियों का सेवन कर सकते हैं। गलत लाइफ स्टाइल और खान-पान के कारण मोटापे से बहुत ही लोग ग्रस्त हैं। यदि आप वजन कम करना चाहते हैं तो सहजन की पत्तियों का जूसक बनाकर पिएं।

खून को साफ करने के लिए

आप खून को साफ करने के लिए भी सहजन की पत्तियों का जूस बनाकर पी सकते हैं। इसमें पाए जाने वाले तत्व आपके खून को साफ करने में मदद करते हैं। पत्तियों का जूस पीने से आपके शरीर में पाए जाने वाले जहरीले पदार्थ यूरिन के द्वारा बाहर निकल जाते हैं। लेकिन इसका सेवन करने से पहले एक बार डॉक्टर की सलाह जरुर ले लें।

आंखों की रोशनी के लिए फायदेमंद

सहजन की पत्तियों में पाए जाने वाले तत्व आपकी आंखों की रोशनी के लिए भी बहुत ही फायदेमंद होते हैं। इसका सेवन करने से आपकी आंखों की रोशनी भी ठीक रहती है। साथ ही आंखों में होने वाली जलन, रैशेज और सूजन जैसी समस्याओं से भी राहत मिलती है।

हड्डियों की मजबूती के लिए

आप हड्डियों से संबंधित समस्या से राहत पाने के लिए सहजन की पत्तियों का सेवन कर सकते हैं। इसमें पाया जाने वाला मेग्नीशियम, फॉस्फोरस और कैल्शियम हड्डियों को मजबूती देने का काम करता है। हड्डियों का मजबूत और हेल्दी रखने के लिए आप सहजन की पत्तियों का सेवन कर सकते हैं।

पेट संबंधी समस्याओं के लिए होगा फायदेमंद

सहजन की पत्तियों का जूस पेट के स्वास्थ्य के लिए बहुत ही फायदेमंद होता है। पेट दर्द, अल्सर जैसी समस्याओं के लिए आप इसको अपनी डाइट में शामिल कर सकते हैं।

इसमें पाया जाने वाला फाइबर आंतों में जमा हुए किसी भी तरह के हानिकारक पदार्थ को दूर करने में मदद करता है। आप कब्ज जैसी समस्या से राहत पाने के लिए भी सहजन की पत्तियों का सेवन कर सकते हैं।

मनमोहक वातावरण और खूबसूरती के लिए प्रसिद्ध है दार्जिलिंग

1881 में स्थापित दार्जिलिंग हिमालयन रेलवे को यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर का दर्जा दिया गया है। यह ट्रेन मैदानी इलाकों से अपनी यात्रा शुरू करती है और समुद्र तल से 2000 मीटर से अधिक ऊपर उठती है, और चलते-चलते पहाड़ों के मनमोहक दृश्य पेश करती है। ब्रिटिश राज के तहत भारत की पूर्व ग्रीष्मकालीन राजधानी दार्जिलिंग, भारत के सबसे अधिक लोकप्रिय हिल स्टेशनों में से एक है। पश्चिम बंगाल का यह सुरम्य पहाड़ी गंतव्य रोमांटिक हनीमून के लिए भी आदर्श है। कई एकड़ चाय बागानों के बीच बसा दार्जिलिंग समुद्र तल से 2,050 मीटर ऊपर है और इसलिए यहां पूरे साल ठंडी जलवायु रहती है। दार्जिलिंग को अक्सर इसके पड़ोसी राज्य सिक्किम के स्थलों के साथ जोड़ा जाता है, जो इसे पूर्वी हिमालय के आश्चर्यों की खोज के लिए एक आदर्श प्रारंभिक बिंदु बनाता है।

1881 में स्थापित दार्जिलिंग हिमालयन रेलवे को यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर का दर्जा दिया गया है। यह ट्रेन मैदानी इलाकों से अपनी यात्रा शुरू करती है और समुद्र तल से 2000 मीटर से अधिक ऊपर उठती है, और चलते-चलते पहाड़ों के मनमोहक दृश्य पेश करती है। दार्जिलिंग अपने चाय बागानों के लिए भी प्रसिद्ध है, यहां 86 से अधिक चाय बागान हैं जो दुनिया भर में प्रसिद्ध दार्जिलिंग चाय का उत्पादन करते हैं। दुनिया की तीसरी और भारत की सबसे ऊंची चोटी कंचनजंगा यहां से दिखाई देती है और आप चोटी के मनोरम दृश्य का आनंद ले सकते हैं। दार्जिलिंग के कुछ सबसे लोकप्रिय आकर्षणों में मठ, वनस्पति उद्यान, एक चिड़ियाघर और दार्जिलिंग-रंगजीत वैली पैसेंजर रोपवे केबल कार शामिल हैं, जो सबसे लंबी एशियाई केबल कार है। टाइगर हिल पहाड़ों के ऊपर अपनी पूरी भव्यता के साथ सूर्योदय देखने के लिए एक शानदार जगह है। दार्जिलिंग घूमने का सबसे अच्छा समय अप्रैल से जून के बीच है जब मौसम सुहावना होता है। हालाँकि, बहुत से लोग अक्टूबर से दिसंबर तक सर्दियों के महीनों के दौरान भी यहाँ आना पसंद करते हैं। जुलाई से अगस्त के महीनों में भारी वर्षा के कारण इस हिल स्टेशन में बहुत सारी बाधाएँ देखी जाती हैं और इसलिए इन महीनों के दौरान दार्जिलिंग का दौरा करना उचित नहीं है।

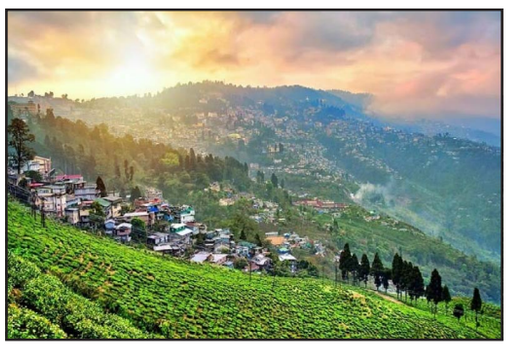

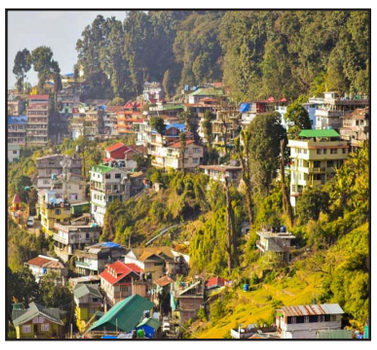

बैंगलुरु में एक-एक बूंद पानी के लिए तरसे लोग, जल संकट के चलते स्कूल हुए बंद

कर्नाटक की राजधानी बैंगलुरु के कई इलाकों में लोग इन दिनों जल संकट से जूझ रहे हैं। इस शहर में पानी की इतनी कमी हो गई है कि कुछ इलाकों में स्कूल और कोचिंग सेंटर भी बंद कर दिए गए हैं। क्लॉसेस को ऑनलाइन कर दिया गया है। शहर में हुई पानी की कमी को पूरा करने के लिए लोग महीने में 10 हजार रुपये तक खर्च कर रहे हैं। इसके अलावा लोगों को पानी संबंधी मदद के लिए सरकार ने अब हेल्पलाइन नंबर भी जारी करने का निर्णय लिया है।

टैंकर के बढ़े दाम

ऐसे में लोगों के लिए पानी के टैंकर बुलाए गए हैं। डिप्टी सीएम डीके शिवकुमार ने कहा कि यहां आम दिनों में पानी की कमी पूरी करने वाला एक टैंकर 700-800 रुपये लेता था लेकिन अब वही पानी की बढ़ती मांग के चलते 1800-2000 रुपये की मांग कर रहा है। बैंगलुरु में रहने वाले स्थानीय प्रवासी शरशचंद्र ने कहा कि हमारे परिवार में कुल 6 लोग हैं उचित तरीके से यदि हम पानी का इस्तेमाल करते हैं तो टैंकर 5 दिन तक चलता है इसका मतलब है कि हमें एक महीने में 6 टैंकर पानी की जरुरत पड़ेगी और इसके लिए हमें हर महीने लगभग 9,000 रुपये खर्च करने होंगे लेकिन हम कब तक ऐसे ही पैसे खर्च करते रहेंगे।

सरकार ने की बड़ी घोषणा

इस मामले पर बैंगलुरु विकास प्रभारी की जिम्मेदारी संभाल रहे उपमुख्यमंत्री शिवकुमार ने बैंगलुरु में पानी की मांग को पूरा करने के लिए निजी टैंकर और निजी बोरवेल को अपने कब्जे में लेने की घोषणा की है। उन्होंने कहा कि पानी की कमी पूरी करने के लिए दूध के टैंकरों का इस्तेमाल भी किया जाएगा। वहीं सरकार प्रति टैंकर पानी का दर तय करने के बारे में भी सोच रही है। सीएम के मुताबिक, कर्नाटक की 136 तालुका में से 123 को सूखाग्रस्त बता दिया गया और 109 तालुका गंभीर रुप से जल संकट से जूझ रहे हैं।

हेल्पलाइन नंबर होगा जारी

कर्नाटर सरकार ने जल संकट से निपटने के लिए हेल्पलाइन नंबर देने का निर्णय लिया है। इसके अलावा उन्होंने पानी की कमी पूरी करने और मवेशियों को चारे की कमी पूरी करनेके लिए क्षेत्र के विधायक के नेतृत्व में तालुका स्तर पर कार्य बल भी बनाई है।

बारिश की कमी के कारण बिगड़े हालात

साल 2023 में पानी की कमी के कारण पूरा कर्नाटक मुख्य रुप से बैंगलुरु को जल संकट से जूझना पड़ रहा है। भार मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) ने कम बारिश के लिए अल नीनो प्रभाव को जिम्मेदार ठहराया है।

काम के चक्कर में लेट करते हैं नाश्ता तो जान लीजिए इसके नुकसान

नाश्ता दिन का पहला मील है और इसलिए इसे एनर्जी का मुख्य सोर्स माना जाता है। लेकिन जब आप नाश्ता देर से करते हैं तो इससे आपको ब्लड शुगर लेवल कम हो सकता है, जिससे आपको सुबह के समय थकान महसूस हो सकती है और आपका एनर्जी लेवल कम हो सकता है। नाश्ता हमारे दिन का पहला मील होता है और इसलिए बहुत ही महत्वपूर्ण माना गया है। 8-10 घंटे की फास्टिंग के बाद हम ब्रेकफास्ट करते हैं। यह दिन की शुरुआत में आपको एनर्जी देता है। लेकिन अक्सर यह देखा जाता है कि सुबह-सुबह लोगों के पास ढेर सारे काम होते हैं। ऐसे में अक्सर वे नाश्ता स्किप ही कर देते हैं और सीधे ब्रंच करते हैं। हो सकता है कि आप भी अक्सर लेट नाश्ता करते हों। अगर आप हर दिन ऐसा करते हैं तो यह आपकी सेहत के लिए ठीक नहीं है। तो चलिए आज इस लेख में हम आपको देर से नाश्ता करने के कुछ नुकसान के बारे में बता रहे हैं-

एनर्जी लेवल होता है कम

नाश्ता दिन का पहला मील है और इसलिए इसे एनर्जी का मुख्य सोर्स माना जाता है। लेकिन जब आप नाश्ता देर से करते हैं तो इससे आपको ब्लड शुगर लेवल कम हो सकता है, जिससे आपको सुबह के समय थकान महसूस हो सकती है और आपका एनर्जी लेवल कम हो सकता है। जिससे आपकी प्रोडक्टिविटी पर भी नेगेटिव असर पड़ सकता है।

मूड खराब होना

अगर आपको ऐसा लगता है कि अक्सर सुबह के समय आपका मूड खराब रहता है तो इसके पीछे आपकी देर से नाश्ता करने की आदत भी जिम्मेदार हो सकती है। नाश्ता मस्तिष्क में न्यूरोट्रांसमीटर लेवल को

नियंत्रित करने में मदद करता है, जिससे आपके मूड पर असर पड़ता है। इसलिए, जब आप नाश्ता स्किप करते हैं या फिर देर से नाश्ता करते हैं तो इससे मूड में बदलाव, चिड़चिड़ापन और तनाव बढ़ सकता है। आपको शायद जानकर हैरानी हो, लेकिन नाश्ता छोड़ने या फिर असमय भोजन करने से क्रॉनिक बीमारियों का खतरा भी कई गुना बढ़ जाता है। अगर आप हर दिन नाश्ता स्किप करते हैं या फिर देर से नाश्ता करते हैं तो इससे आपको मोटापा, टाइप 2 डायबिटीज और हृदय रोग का जोखिम बढ़ जाता है।

कपड़ों ही नहीं, किचन में भी इन तरीकों से काम आ सकता है फैब्रिक सॉफ्टनर

किचन में हम कई तरह के अप्लाइंस का इस्तेमाल करते हैं। लेकिन अगर आप स्टेनलेस स्टील के अप्लाइंस को क्लीन करना चाहते हैं तो ऐसे में फैब्रिक सॉफ्टनर का इस्तेमाल करें। इसके लिए एक स्प्रे बोतल में पानी के साथ फैब्रिक सॉफ्टनर को मिक्स करें। कपड़ों की बेहतर क्लीनिंग के लिए अधिकतर लोग फैब्रिक सॉफ्टनर का इस्तेमाल करते हैं। फैब्रिक सॉफ्टनर ना केवल कपड़ों की शेल्फ लाइफ बढ़ाते है, बल्कि इसके कारण कपड़ों से भीनी-भीनी खुशबू भी आती है। यही कारण है कि फैब्रिक सॉफ्टनर की डिमांड पिछले कुछ समय में काफी बढ़ गई है। हालांकि, अगर आप ऐसा सोचते हैं कि फैब्रिक सॉफ्टनर का इस्तेमाल केवल कपड़ों के लिए ही किया जा सकता है, तो आप गलत हैं। वास्तव में, फैब्रिक सॉफ्टनर एक मल्टीपर्पस प्रोडक्ट है और आप इसे कई अलग-अलग तरीकों से काम में ला सकते हैं। आपको शायद जानकर हैरानी हो, लेकिन फैब्रिक सॉफ्टनर किचन में भी आपकी मदद कर सकता है। तो चलिए आज इस लेख में हम आपको फैब्रिक सॉफ्टनर को किचन में इस्तेमाल करने के कुछ अमेजिंग आइडियाज के बारे में बता रहे हैं- किचन में हम कई तरह के अप्लाइंस का इस्तेमाल करते हैं। लेकिन अगर आप स्टेनलेस स्टील के अप्लाइंस को क्लीन करना चाहते हैं तो ऐसे में फैब्रिक सॉफ्टनर का इस्तेमाल करें। इसके लिए एक स्प्रे बोतल में पानी के साथ फैब्रिक सॉफ्टनर को मिक्स करें। अब इसका उपयोग अपने रेफ्रिजरेटर, ओवन या माइक्रोवेव जैसे स्टेनलेस स्टील के उपकरणों को साफ करने के लिए करें। फैब्रिक सॉफ्टनर ग्रीस को तोड़ने में मदद करता है,

जिससे अप्लाइंस शाइन करने लगते हैं। हम सभी अपनी किचन के वेस्ट आइटम को फेंकने के लिए डस्टबिन का इस्तेमाल करते हैं। हालांकि, कुछ वक्त बाद इनमें से स्मेल आने लगती है। अगर आप इस दुर्गंध को दूर करना चाहते हैं तो ऐसे में फैब्रिक सॉफ्टनर का इस्तेमाल करें। आप फैब्रिक सॉफ्टनर को पानी में मिक्स करें। इससे अपने डस्टबिन में स्प्रे करें। यह हैक उनके लिए बेहद उपयोगी हो सकता है जिनमें बचा हुआ भोजन या अन्य बदबूदार कचरा रखा जाता है। लगातार इस्तेमाल के बाद डिश टॉवल या फिर रैग्स में से अजीब सी स्मेल आने लगती है। इसके लिए भी फैब्रिक सॉफ्टनर की मदद ली जा सकती है। बस आप एक छोटी बाल्टी में पानी और थोड़ी मात्रा में फैब्रिक सॉफ्टनर डालें।

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक विजय शंकर शर्मा द्वारा ग्रुप 5 प्रकाशन 55-बी, वजीर हसन रोड, लखनऊ से मुद्रित एवं डी-206-सी, विभूतिखण्ड गोमती नगर लखनऊ से प्रकाशित। सम्पादक- विजय शंकर शर्मा
(M.)- 9628478339, 9335322739 Ph: 0522- 4075237 Fax: 0522- 2306048 Email- charchitrajnit@gmail.com
CMYK